चन्दामामा
मार्च १९७०
75 P

मार्च १९७०

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ०-७५ पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ९-००

हमारी मांग...
दौराला
स्वीट्स !

दौराला
टाफ़ीयां दो !

हमें दौराला
लालीपॉप्स
चाहियें !

बच्चों की मनपसंद

दौराला स्वीट्स और टाफ़ीयां

अनेक किस्मों में मिलने वाली दौराला स्वीट्स
और टाफ़ीया — अत्यंत स्वादिष्ट और मज़ेदार।

व्यावहारिक पूछ-ताछ के लिये :
कन्फेक्शनरी सेल्स डिपार्टमेंट
[illegible] भवन, झण्डेवाला, नई दिल्ली-५५

DCM

क्लिक

ह्विर

ज़ूम!

कबूम!

भारत का पहला दूर से नियंत्रित खिलौना! एक्सप्लोडिंग टैंक
देखिये यह कैसे काम करता है...
क्लिक... बस बटन दबाइये।
ह्विर... इसमें जीवन का संचार होने लगेगा।
ज़ूम... यह छः विभिन्न दिशाओं में से किसी ओर चल पड़ेगा।
कबूम! यह एक सुरंग पर चलकर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।
इसे आप १० सेकंड में ही फिर से जोड़ सकेंगे और चालू कर सकेंगे।
एक्सप्लोडिंग टैंक—रोमांचक बिल्कुल नया खिलौना।

टाइडी होम का उत्पादन

म्युचुअल प्लास्टिक्स

Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (Form IV), Newspapers (Central) Rules, 1956

1. *Place of Publication*	:	'CHANDAMAMA BUILDINGS' 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
2. *Periodicity of Publication*	:	MONTHLY 1st of each calendar month
3. *Printer's Name*	:	B. V. REDDI
Nationality	:	INDIAN
Address	:	Prasad Process (Pvt) Ltd., 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
4. *Publisher's Name*	:	B. VISWANATHA REDDI
Nationality	:	INDIAN
Address	:	Managing Partner, Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
5. *Editor's Name*	:	CHAKRAPANI (A. V. Subba Rao)
Nationality	:	INDIAN
Address	:	2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
6. *Name & Address of individuals who own the paper*	:	SARADA BINDING WORKS: PARTNERS 1. Sri B. Viswanatha Reddi, 2. Sri B. L. N. Prasad, 3. Sri B. Venugopal Reddi, 4. Sri B. Venkatrama Reddy, 5. Smt. B. Seshamma, 6. Smt. B. Rajani Saraswathi, 7. Smt. A. Jayalakshmi, 8. Smt. K. Sarada.

I, B. Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

B. VISWANATHA REDDI
Signature of the Publisher
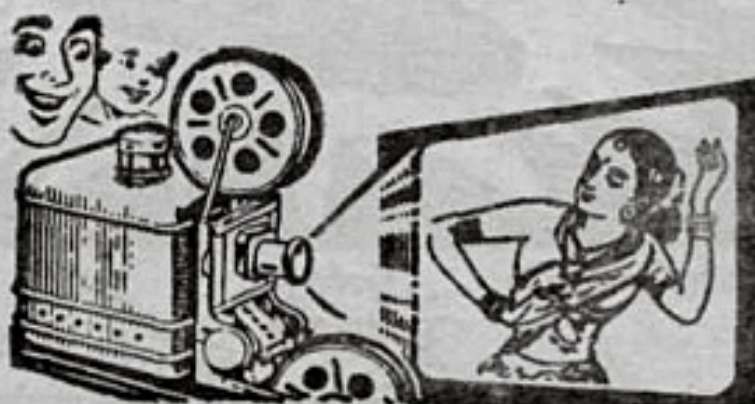
1st March 1970

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

दाता सब एक प्रकार के नहीं होते । कुछ लोग पुण्य कमाने के ख्याल से दान करते हैं, तो कुछ लोग यश के वास्ते दान देते हैं। कुछ लोग दयाभाव से प्रेरित होकर भी दान देते हैं। मगर कुछ ऐसे भी लोग हैं जो दान करने में अहंकार का अनुभव करते हैं। "भाग्य का हाथ" नामक कहानी में हमें अंतिम प्रकार का दानी दिखायी देता है । ऐसे व्यक्ति से जो व्यक्ति दान नहीं लेता, वही स्वतंत्र व्यक्ति है ।

वर्ष : २१ मार्च १९७० अंक : ७

भाग्य का हाथ

एक गाँव में दो अभागे थे। वे दोनों सब तरह से धोखा खा चुके थे। दूसरों से इन्हें कभी किसी तरह की मदद न मिली थी। इसलिए दोनों ने निश्चय किया कि पड़ोसी देश में जाकर उस देश के राजा महेन्द्रवर्मा से मदद पावे और अपना शेष जीवन आराम से बितावे। यह सोच कर दोनों निकल पड़े।

रास्ते में उन की एक यात्री से भेंट हुई। वह भी गरीब ही था, लेकिन बेफ़िक्र था। देखने में ऐसा लगता था, मानों उसे किसी बात की चिंता नहीं है।

"तुम दोनों कहाँ जा रहे हो?" यात्री ने उन दोनों मित्रों से पूछा।

"हम दोनों लोगों से खूब धोखा खा चुके हैं। हमारी क़िस्मत भी खोटी रही है। इसलिए हम राजा महेन्द्रवर्मा से मदद पाकर फिर से आराम की ज़िंदगी जीना चाहते हैं। हमने सुना है कि राजा महेन्द्रवर्मा बड़े ही दानी हैं और जो भी याचक कुछ माँगे, दे देते हैं। इसलिए हमारी इच्छा को पूरा करना उनके लिए कोई मुश्किल की बात भी नहीं है।" दोनों मित्रों ने यात्री से कहा।

इसके बाद उन मित्रों ने यात्री से उसकी यात्रा का कारण पूछा। तब यात्री ने यों बताया—"मेरे कोई घर-बार नहीं है। मैं भी गरीब हूँ। मगर मैं किसी से दान लेना नहीं चाहता। मेरी हालत भी वह जानता है। भगवान खुद जो चीज नहीं दे सकता, वह साधारण मानव कैसे दे सकता है? इसलिए मैं अपना पूरा भार भगवान पर छोड़ कर बेफ़िक्र यात्रा कर रहा हूँ।"

कई दिन यात्रा करके वे तीनों राजा महेन्द्रवर्मा के राज्य में पहुँचे। एक रात

यामिनी देवी

को तीनों एक उजड़े हुये मकान में ठहरें। वे बड़ी रात बीतने पर भी वार्तालाप में निमग्न थे। उसी समय राजा महेन्द्रवर्मा वेश बदल कर घूमते-घामते उस मकान की तरफ़ बढ़े। उन्होंने तीनों यात्रियों का वार्तालाप सुना।

महेन्द्रवर्मा ने दूसरे दिन तीनों यात्रियों को अपने दरबार में बुला भेजा। प्रत्येक व्यक्ति से यही सवाल किया–"तुम परदेशी मालूम होते हो! तुम्हारी इच्छा क्या है?"

"महाराज, एक समय हमारा परिवार संपन्न था। हमने अपने दिन बड़े मजे में बिताये, लेकिन धीरे-धीरे सारी संपत्ति जाती रही। जायदाद के खतम होने के पहले अगर मुझ में ज्ञानोदय होता तो मैं कोई न कोई व्यापार करके सुख की ज़िंदगी जीता। अब भी सही, आप जैसे दानी मुझे दस हज़ार सोने की मोहरें दे तो मैं आराम से जी सकूँगा।" एक ने जवाब दिया।

दूसरे ने यों कहा–"महराज, कुछ साल पहले मैंने रंभा जैसी सुंदर कन्या से शादी की। उसके साथ सुख भोगते मैंने सोचा कि मुझ जैसे भाग्यवान सारी दुनिया में कोई न होगा। मगर अचानक मेरी
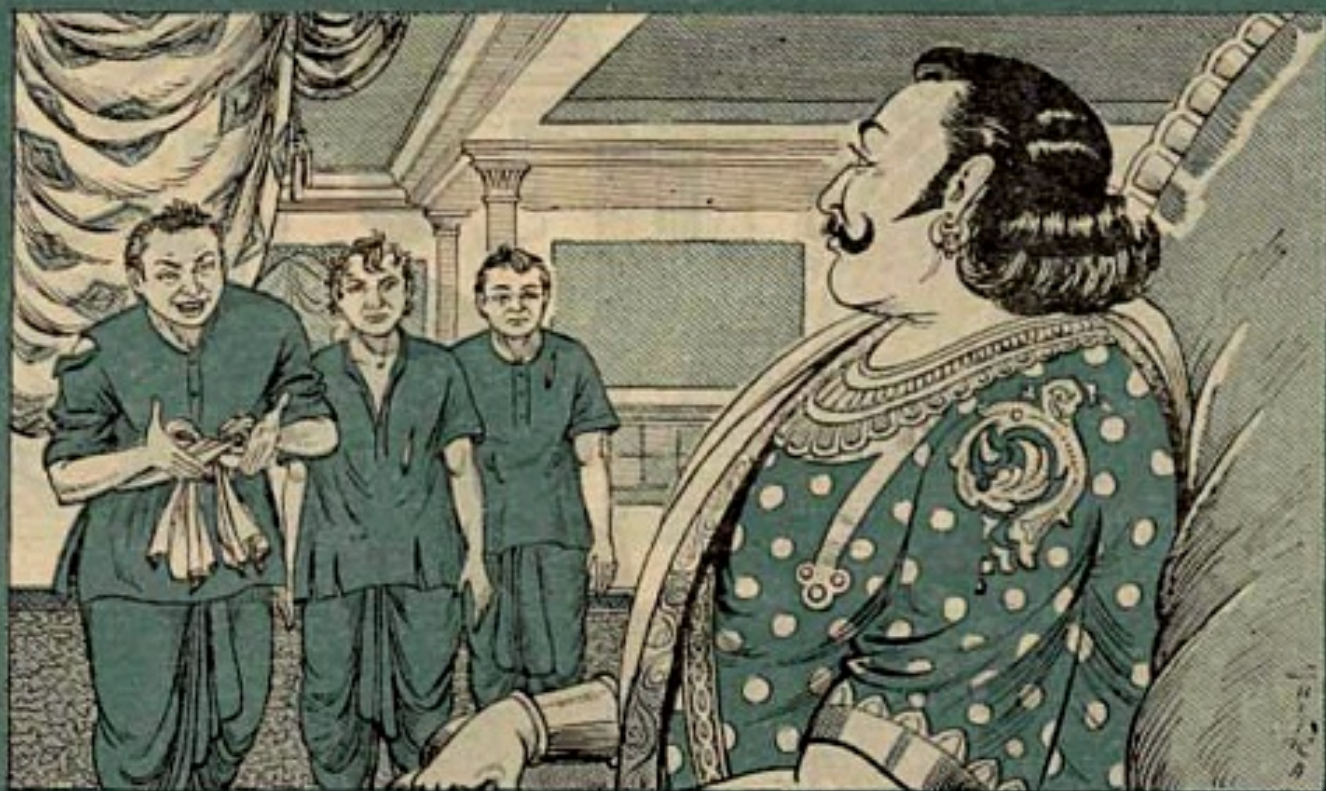
पत्नी मर गयी। मुझे लगा कि मैं पागल होता जा रहा हूँ। इसलिए मैं अपने गाँव और रिश्तेदारों को छोड़ देशाटन पर चल पड़ा। मुझे पहले की ज़िंदगी बितानी है तो पहली पत्नी को भी भुला देने वाली सुंदर कन्या चाहिये। आप कृपा करके मुझे एक सुंदर कन्या दिला दे तो मैं आराम से जी सकता हूँ।"

राजा महेन्द्रवर्मा ने तीसरे से पूछा– "तुम्हारी क्या इच्छा है?"

"महाराज! हर मनुष्य की अनेक इच्छाएँ होती हैं। मगर उनकी पूर्ति करना चाहिये या नहीं, इसका निर्णय करनेवाले मनुष्य नहीं बल्कि भगवान हैं। मैं स्वतंत्र व्यक्ति हूँ। मैं किसी से याचना नहीं करूँगा और न मैं किसी का ऋणी बनूँगा।" तीसरे यात्री ने कहा।

राजा महेन्द्रवर्मा तीसरे यात्री की बातें सुनकर नाराज़ हो गया। वह दान के लिए मशहूर था। दूर दूर से लोग आकर उससे दान लेते थे, ऐसी हालत में यह ग़रीब आदमी अपना दान लेने से इनकार करता है। यह उससे सहा न गया। उसने पहले यात्री को दो थैलियाँ सोना और दूसरे को एक सुंदर कन्या देकर कहा– "अब तुम तीनों जा सकते हो।"

तीनों यात्री राज दरबार से चल पड़े। राजा महेन्द्रवर्मा ने एक सिपाही को बुलाकर आदेश दिया–"तीन यात्री हमारा राज्य छोड़कर चले जा रहे हैं। तुम घोड़े पर सवार होकर जल्द जाओ और उन लोगों से मिलो। एक के पास दो थैलियाँ हैं, दूसरे के साथ एक सुंदर कन्या है। उन दोनों को छोड़कर खाली हाथ जानेवाले का सर काट कर लेते आओ।"

इस बीच में हुआ क्या, जो यात्री सोने की थैलियाँ ले जा रहा था, वह थक गया। उसने खाली हाथ जानेवाले यात्री से मिन्नत कर थोड़ी दूर थैलियाँ लाने को उसे मनवाया। उसी समय सिपाही आया। वह एक आदमी का हाथ खाली देख उसका सर काट कर ले गया।

राजा महेन्द्रवर्मा उस सर को देख चकित रह गया। "मैंने इसका सर काट लाने को नहीं कहा था? तुमने भूल की, फिर जाओ, सुंदर कन्या को साथ ले जाने वाले को छोड़ दूसरे का सर काट लाओ।" राजा ने फिर सिपाही को भेजा।

सिपाही के लौटने के पहले कन्यादान पाया हुआ व्यक्ति लघुशंका करने रुक गया। उसके साथ चलनेवाली कन्या तीसरे यात्री के साथ आगे बढ़ी। थोड़ी देर बाद लघुशंका करके वह यात्री भी आगे बढ़ा। उसी समय सिपाही ने आकर अकेले चलनेवाले व्यक्ति का सर काटा और उसे ले जाकर राजा के सामने रखा।

राजा का दूसरा प्रयत्न भी बेकार गया। उसकी दया पर निर्भर रहनेवाले दोनों उसी की वजह से मर गये। लेकिन जो भाग्य के भरोसे भगवान पर विश्वास करता था, उसे, दो थैलियाँ सोने के साथ सुंदर कन्या भी प्राप्त हो गयी। यह बात जानकर राजा महेन्द्रवर्मा अपने अहंकार पर पछताने लगा!

सोने की फ़सल

जावा टापू में डोंगो नामक एक गरीब लड़का था। वह अनाथ था। वह एक विधवा के खेत का काम किया करता था। वह खेत बड़ा उपजाऊ था। फिर भी जिस साल डोंगो ने खेत का काम करना शुरू किया, वह साल सारा धान पैया हो गया था। धान में बालें खूब थीं, मगर दाँवने पर सब पैया निकला, दाने नहीं थे।

दूसरे साल भी फ़सल की यही हालत रही, इस पर गाँव भर में कानाफूसी होने लगी। लोग कहने लगे कि वह विधवा कंजूस है। वह ग्राम देवता को नैवेद्य नहीं चढ़ाती, इसीलिए फ़सल खराब होती जा रही है। यह बात सुनने पर विधवा को बड़ा गुस्सा आया और उसने डोंगो के हाथ में एक कौड़ी तक नहीं रखी। बल्कि उसे अपने घर से निकाल दिया।

डोंगो भूख से तड़पते उस गाँव से चल पड़ा। चलते-चलते शाम को वह एक दूसरे गाँव में पहुँचा। उसने एक घर के निकट पहुँच कर दर्वाज़ा खटखटाया। एक विधवा ने आकर दर्वाज़ा खोला। डोंगो थकावट के मारे ज़मीन पर लुढ़क पड़ा और कराहते हुए बोला—"माई, मेरी जान चली जा रही है। थोड़ा खाना खिलाओ। तुम्हारा पुन्न होगा।"

विधवा हाथ का सहारा दे डोंगो को घर के भीतर ले गयी। उसे भर पेट खाना खिलाकर बोली—"अरे, तुम तो हट्टे-खट्टे हो। भीख क्यों माँगते हो? कोई काम-वाम तो करते?"

डोंगो ने अपनी सारी कहानी सुनाकर कहा—"मैंने खूब मेहनत की, लेकिन जिस खेत का काम मैंने किया, उसका धान पैया निकला। क्या यह मेरा दोष है? न

जावा की लोक-कथा

मालूम उस खेत की मालकिन का भाग्य कैसा था? मगर मालिकिन ने मुझे घर से निकाल दिया।"

"इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। तुम खेत का काम जानते हो तो हमारे खेत में करो। उसमें जो फ़सल होगी, उसका तुम पाँचवा हिस्सा लो। हमारे घर बैल-भैंस नहीं हैं। तुम्हीं को खेत का सारा काम करना होगा।" विधवा ने समझाया।

"कोई बात नहीं। मैं जी-तोड़ मेहनत करूँगा।" डोंगो ने जवाब दिया। दूसरे दिन सवेरे उठकर डोंगो फावड़ा ले खेत की ओर चल पड़ा। फावड़ा से सारा खेत खोदकर इस तरह बनाया, मानों हल चलाया गया हो। समय पर बोवाई की, खेत लहलहा उठा। सुंदर बालें निकलीं। धान का रंग सुनहला था।

खेत की कटाई का समय निकट आया। डोंगो ने बालों को नोचकर देखा। सब पैये थे। उनमें दाने न थे।

यह सोचकर डोंगो हताश हो गया— 'यह सब मेरी बदक़िस्मती का फल है। जो भी मुझे काम देता है, उसका यही हाल होता है।' सच्ची हालत अपनी मालकिन

को बताने की उसकी हिम्मत न हुई। उसने सोचा कि कटाई हो जाने पर असली हालत उसे अपने आप मालूम हो जायगी। मैं पहले ही यह हाल बताकर नाहक़ क्यों बदनाम हो जाऊँ?

कटाई के पहले दिन डोंगो ने भागने की सोची। दूसरे दिन सवेरे उठकर दबे पाँव घर से निकल पड़ा। लेकिन उसे लगा कि मेहनत कर उसने जो फ़सल पैदा की, उसे एक बार देखते जाना अच्छा होगा। खेत पर पहुँच कर बालें नोच कर देखा। भीतर चावल के धाने न थे, बल्कि पतले सोने के दाने जैसे थे।

डोंगों को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। उसने कई धान नोच कर देखे, सब में सोने के दाने थे। उसने दौड़ते जाकर अपनी मालकिन को सोने के दाने दिखाये।

"अरे, बात क्या है? तुम बहुत ही खुश नज़र आते हो?" मालिकिन ने पूछा।

"मालिकिन, हमारे खेत ने सोना उगला है।" दाने मालिकिन के हाथ धर दिये।

डोंगो की बातें सच थीं। खेत की कटाई करा कर बालों को कुचलवाने पर सोने के दानों का ढेर लग गया। मालिकिन ने उसमें से पाँचवा हिस्सा डोंगो को देकर अपने वचन का पालन किया। उसने सारे गाँववालों को दावत भी दी।

डोंगो ने अपने हिस्से के सोने से खेत खरीदा। उसकी मालिकिन ने भी और ज़मीन खरीद ली। डोंगो ही दोनों के खेतों का काम देखने लगा। खेत में काम करनेवालों को डोंगो पैदावर में से पाँचवा हिस्सा देने लगा। उस दिन से लेकर जावा में खेत का काम करने वालों को फ़सल में से पाँचवाँ हिस्सा देने का रिवाज चल पड़ा।

शिथिलालय

[२६]

[शिथिलालय का पुजारी इभ्यों को धोखा देकर एक बिल के मार्ग से भाग गया। इभ्यु नायक अपने दल के नेता नांगसोम को वृच्छिक टापू का मार्ग दिखाने के लिए शिखिमुखी के साथ भेजने को मान गया। तीन बड़ी नौकाएँ तैयार की गयीं। सब वृच्छिक टापू के लिए रवाना हुए। इसके बाद–]

सूर्यास्त तक शिखिमुखी के दल ने यात्रा की, तब रात के ठहरने के लिए अनुकूल टापू की खोज करने लगे। पंद्रह मिनट की यात्रा के बाद उन्हें एक टापू दिखाई पड़ा। नावों को किनारे के पेड़ों से बाँधकर वे लोग रसोई की तैयारी करने लगे। उन लोगों ने सोचा कि चूल्हों के धुए को देख तीसरी नाव में यात्रा करनेवाले भी थोडी देर में वहाँ पर आ जायेंगे।

धीरे-धीरे अंधेरा फैल गया। रसोई के बनते ही सब ने खाना खाया। एक अलाव जलाकर उसके चारों ओर बैठ गये और बातों में लग गये। तीसरी नाव अभी तक उस टापू में पहुँची न थी। शिखिमुखी को पूरा यक़ीन हो गया कि शिथिलालय का पुजारी उन लोगों से पहले वृच्छिक टापू के लिए रवाना हो चुका है। अगर कहीं रास्ते में उनकी नावों से पुजारी

नांगसोम ने स्वीकृति सूचक सर हिलाया। विक्रमकेसरी ने चारों तरफ़ एक बार नज़र दौड़ाकर कहा–"तुम इस टापू के बारे में सोचते हो? मुझे तो पुजारी की याद आती है। यह संदेह भी होता है कि उसने भी इस टापू में कहीं और जगह डेरा डाल दिया हो।"

इस पर शिखिमुखी हँस पड़ा और सूखी लकड़ियाँ अलाव में डालने लगा। अचानक टापू के एक कोने से दिल दहलानेवाली भयंकर आवाज़ सुनाई दी। लाल कुत्ता उस ओर मुख किये भूँकने लगा।

की नाव की भेंट हुई तो दोनों में लड़ाई निश्चित है। उस वक़्त उनमें से कुछ लोग ज़रूर जलचरों का खाना बन जायेंगे......

शिखिमुखी इस प्रकार सोच ही रहा था कि उसे टापू के पेड़ों पर पक्षियों के कलरव के साथ किनारे पर पानी में मगरमच्छ तथा अन्य जलचरों की ध्वनियाँ भी सुनाई देने लगीं। उसने विक्रमकेसरी से कहा–"देखते हो न, इस टापू के चारों ओर का वातावरण कैसा भयंकर है? इससे खूँख्वार जानवरोंवाले जंगल में बिताना हज़ार गुना सुखदायक होगा।"

शिखिमुखी झट उठ खड़ा हुआ और बोला–"यह आदमी की पुकार है या जानवर की?"

"कोई आदमी खतरे में फँस गया मालूम होता है। या हमें धोखा देने पुजारी ने कोई चाल चली हो! हाथों में हथियार लिये अभी रवाना हो जाओ!" विक्रमकेसरी ने कहा।

अजित और वीरभद्र झट दो मशाल जलाकर आगे निकल पड़े। इस बार किसी आदमी के चिल्लाने की आवाज़ साफ़ सुनाई देने लगी। सब लोग उस आवाज़ की दिशा में दौड़ पड़े। एक

लंगड़ा आदमी इधर-उधर लंगड़ाते, अपने हाथ की लकड़ी से हमला करनेवाले दो मगरमच्छों के साथ लड़ रहा है।

शिखिमुखी उस लंगड़े की रक्षा करने आगे कूद पड़ा। इतने में लाल कुत्ता भूंकते हुए लंगड़े पर झपट पड़ा। कुत्ते की भूंक सुनकर कांपते हुए लंगड़ा बोला—"शिखी साहब, पहले आप मेरी रक्षा मगर-मच्छों से नहीं, बल्कि लाल कुत्ते से कीजिये। इसके बाद आप मुझे जो भी सजा देना चाहे, दीजिये।"

उस लंगड़े की आवाज सुनकर सब ने समझ लिया कि वह और कोई नहीं, बल्कि उन्हें दगा देकर भागनेवाला जांगला ही है। चाहे वह दुष्ट ही क्यों न हो, उसे कुत्ते से नुचवना मानवता नहीं कहलाती, इसलिए शिखिमुखी ने लाल कुत्ते को अपने पास बुलाया और अपने हाथ की तलवार से एक मगर-मच्छ के सर पर प्रहार किया। इसी वक्त अजित ने दूसरे मगर-मच्छ पर भाला चुभोया।

दोनों मगर-मच्छ चोटों से ज्यादा मशालों की रोशनी से डर गये और झटपट पानी में कूद पड़े। जांगला हाँफते हुए जमीन पर लुढ़क पड़ा। वह कुछ कहना चाहता था, मगर उसके मुँह से बोल नहीं फूटे।

शिखिमुखी और उसके साथी इस विचित्र घटना पर चकित हुए। वे यह सोच भी नहीं पाये कि इतनी रात बीते जांगला उस टापू में कैसे पहुँच पाया है। मगर विक्रमकेसरी के मन में यह संदेह पैदा हुआ कि पुजारी ने उन लोगों के रहस्य का पता लगाने जांगला को तो नहीं भेजा।

शिखीमुखी जांगला से कुछ पूछने ही जा रहा था कि इतने में विक्रमकेसरी ने तलवार उठा कर पूछा—"जांगला, सच बताओ वरना तुम्हारे दूसरा पैर भी

"यह कपट नाटक मेरे सामने नहीं चलने का है। सच बताते हो कि नहीं?" ये शब्द कहते विक्रम ने जांगला की गर्दन पर तलवार टिकायी।

शिखीमुखी ने मुस्कराते हुए कहा– "विक्रम, लगता है कि तुम अपनी प्रतिज्ञा भूल कर उसकी गर्दन काट रहे हो। अभी अभी तुमने बताया कि जान के साथ उसे मगर-मच्छों का खाना बनाओगे। ज़रा ठहरो तो... जांगला! तुम्हारी हालत देखने पर मालूम होता है कि तुम आराम की मौत मरना चाहते हो। मगर याद रखो कि तुम सच न बताओगे तो विक्रम तुमको जान के साथ मगर-मच्छों का आहार बना डालेंगे। समझें?"

जांगला पल-भर मौन रहा, तब बोला– "शिखी साहब, अपराधी के मरते वक़्त चाहे सच बोले या झूठ, दोनों बराबर हैं। लेकिन मौत के पहले मैं जो सच्ची बात बताने जा रहा हूं, वह आपके लिए लाभदायक होगी। दुष्ट पुजारी आज दुपहर को दो नावों में शिथिलालयवाले टापू की ओर चला गया है। आप लोगों के वहां पहुंचने तक आपका अहित करने की ताक में वह बैठा होगा। इसलिए सावधान रहिये।"

तोड़कर जान के साथ मगर-मच्छों के बीच फेंकवा दूंगा। तुम्हारा मालिक वह कमबख़्त पुजारी इस टापू में कहां पर छिपा हुआ है?"

ऐसा लगा कि इस सवाल को सुनकर जांगला भयभीत नहीं हुआ है। उस ने इस तरह गहरी सांस ली, मानों जिंदगी से ऊब गया हो, तब बोला–"विक्रम साहब, मैंने आप लोगों के साथ जैसा द्रोह किया है, उसे देखते हुए चाहे मैं सच भी बता दूं, आप लोग यक़ीन नहीं करेंगे। इसलिए आप मुझे वही दण्ड दीजिये जो दिल से देना चाहते हैं।

शिखीमुखी को लगा कि जांगला की बातों में असत्य नहीं है। उसने विक्रम को अलग ले जाते हुए जांगला से कहा–"सुनो, ऐसी बात हो तो तुम अपने मालिक के साथ न जाकर इस मगर-मच्छोंवाले टापू में क्यों उतर पड़े?"

"मरने के पहले कम से कम सच्ची बात बताने के लिए रह गया, साहब! मैंने आपको दगा देने का जो द्रोह किया, उसकी वजह से चीते के हाथों में फँस कर लंगड़ा बन गया। मेरे पाप ने ही मुझे दण्ड दिया। कामाख्यानगर में इज्ज़त की ज़िंदगी जीनेवाले मुझे धन का लोभ देकर दुष्ट पुजारी ने बदमाश बनाया। मौक़ा पाकर मैंने उसे खतम करना चाहा, लेकिन वह दुष्ट ग्रहों का उपासक है। शायद उसने मेरे विचार को भांप लिया, इसलिए मुझे भयंकर जलजंतुओं का आहार बनाना चाहा।" जांगला ने कहा।

"तुमको जल-जंतुओं का आहार बनाया, यह कैसे संभव हुआ?" शिखिमुखी ने अचरज में आकर पूछा।

जांगला ने कहना प्रारंभ किया–"गोलभरा प्रदेश की नदी से लेकर यहाँ तक जब उसकी नावें बढ़ती चली आ रही

थीं, तब से मैं चारों तरफ़ के टापुओं को ध्यान से देखते उसका परिशीलन करने लगा। मैं एक कुशल तैराक हूँ। पुजारी के दल को मौक़ा पाकर किसी नदी में डुबोकर मैं किसी तख्ते की मदद से गोलभरा लौट जाना चाहता था। यह मेरी योजना थी। लेकिन उस दुष्ट ने मेरी योजना को भांप लिया। आज दुपहर को जब नौकाएँ इस टापू के किनारे आगे बढ़ रही थीं, तब उसने नौका में से पानी में झांक कर देखा और बोल पड़ा–'ओह, शिथिलेश्वरी का कंठाभरण महा जल सर्प ने दर्शन दिया है? उसे प्रसाद चढ़ाना होगा? ज़रूर चढ़ाऊँगा।

एक सजीव प्रसाद को स्वीकार कर हमें सुरक्षित शिथिलेश्वरी के मंदिर में पहुँचा दो।' ये शब्द कहते उसने आँखें बंद कर अपने पीतांबर को उछाल दिया। वह सीधे आकर मेरे सर पर गिर पड़ा। तुरंत वह चिल्ला पड़ा–'ओह, जांगला! तुम्हारी क़िस्मत को क्या कहे? तुम शिथिलेश्वरी की सेविका का आहार बनकर अगले जन्म में सारी इम्भ्यु जाति का नेता बनकर जन्म लेनेवाले हो!'
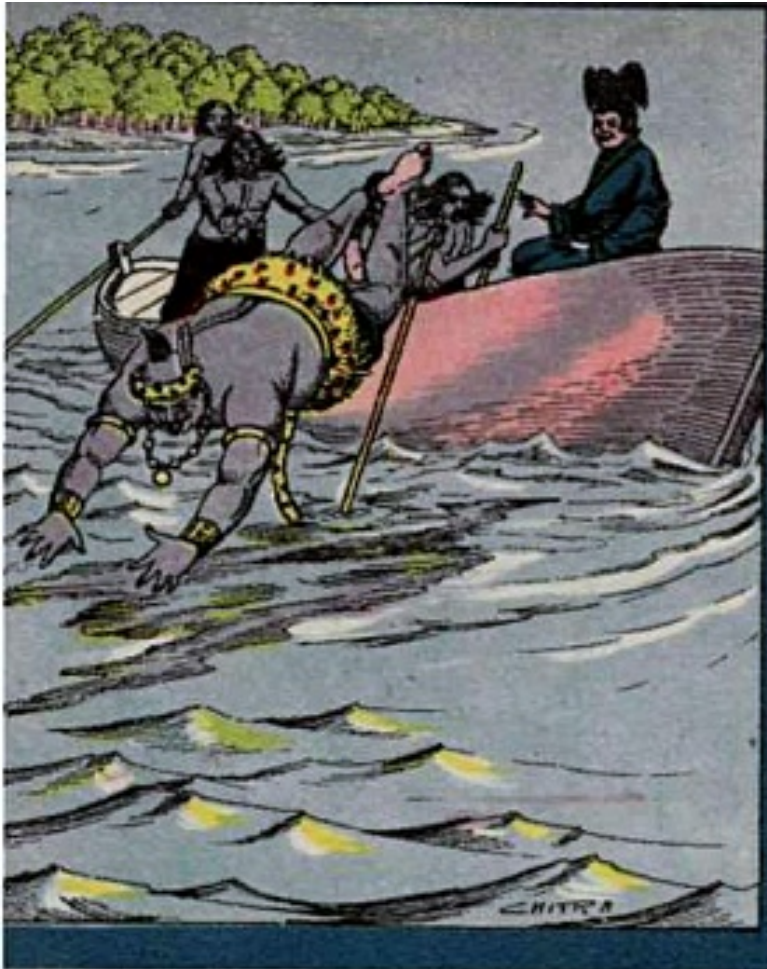
"मैं यह सोच ही रहा था कि वह दुष्ट क्या करनेवाला है? इसी बीच उसने सवरगीघ का इशारा किया। सवरगीघ ने एक ही छलांग में आकर मुझे नाव से पानी में गिरा दिया। मैं डूब जाने का अभिनय करके पानी के भीतर ही तैरते हुए समीप के इस टापू में आ पहुँचा। मैं थकावट और भूख से शिथिल हो गया था। ऐसी हालत में मगर-मच्छों ने मुझ पर हमला कर दिया। आपने आकर मेरी रक्षा की। वरना मैं मर जाता। यही मेरी कहानी है।"

शिखिमुखी ने विक्रमकेसरी की ओर देखा। वह दूसरी ओर मुड़कर सोच रहा था। शिखिमुखी ने थोड़ी देर तक ठहरकर पूछा–"विक्रम, तुम्हारा क्या विचार है? जांगला की बातों पर विश्वास कर सकते हैं या नहीं?"

"उसने अपनी कहानी इस ढंग से बतायी कि हमें उस पर विश्वास करना पड़ रहा है।" विक्रमकेसरी ने जवाब दिया।

विक्रम की बातों पर हँसकर शिखिमुखी ने यही सवाल अजित, वीरभद्र और नांगसोम से पूछा। उन लोगों ने भी कहा कि जांगला का जवाब विश्वसनीय मालूम होता है।

"तब तो कल सुबह हम लोग जांगला को अपने साथ ले जायेंगे? क्यों विक्रम? ठीक है न?" शिखिमुखी ने पूछा।

"जरूर उसे हम अपनी नावों में साथ ले जायेंगे। फिर दगा देने की कोशिश की तो इस बार ज़रा भी मौक़ा दिये बिना तलवार से उसका शरीर टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।" विक्रमकेसरी ने कहा।

सब लोग वहाँ से निकल पड़े। तब जांगला ने शिखिमुखी और विक्रमकेसरी के पैर छुये, और लाठी की मदद से लंगड़ाते पीछे चलने लगा।

दूसरे दिन सवेरे ही सब लोग जाग पड़े। कालकृत्यों से निवृत्त होकर यात्रा के लिए नावों को तैयार किया। जांगला को शिखिमुखी और विक्रमकेसरीवाली नाव में चढ़ाया गया। शिखिमुखी ने यह सोचकर ऐसा प्रबंध किया कि जरूरत पड़ने पर डांड चलाने में वह बीरभद्र की मदद कर सकता है। रवाना होने के पहले उन लोगों ने इम्युदल के साथ पीछे आनेवाली नाव के रास्ते के चारों तरफ़ नजर दौड़ाकर देखा। नाव का कहीं पता न था। शिखिमुखी और विक्रमकेसरी को यह संदेह हुआ कि वे लोग रास्ता तो भटक नहीं गये!

हवा का रुख अनुकूल था। इसलिए डांड़ चलाना छोड़ पाल उठाये गये। नांगसोम और बीरभद्र की नाव आगे जाने लगी। दुपहर के क़रीब शिखिमुखी यह सोचने लगा कि किसी टापू में उतरकर रसोई बना ले, तब एक टापू के मोड़ पर जल की तरंगें उठ उठकर नाव की ओर आने लगीं। किसी की समझ में न आया कि उस प्रशांत जल में हठात् ऊँची-ऊँची लहरें कैसे उठने लगीं?

नांगसोम ने अपनी नौका को डांड़ों की मदद से पास के टापू की ओर ले जाते शिखिमुखी को भी सचेत किया। इतने में

टापू के नुक्कड़ पर अचानक दो नावें लहरों के थपेड़े खाकर डोलते उनकी तरफ़ आने लगीं।

उस नाव में बैठे हुए लोगों को शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने झट पहचान लिया। एक नाव में हाथ उठाकर खड़े हो शिथिलालय का पुजारी चिल्ला रहा था–"जलसर्प हमको निगलना चाहता है। नावों को किनारे की ओर ले जाओ।"

देखते-देखते वह जलसर्प भी शिखिमुखी के दल को दिखाई पड़ा। उस सर्प का कंठ और सर सर्प जैसे थे, मगर शरीर दस-बारह हाथियों के परिमाण में लंबा था। वह अपने पैरों से पानी को उछालते हुए सर उठाकर पुजारी के दल को पकड़ने के लिए ऊपर-नीचे उलटा रहा था।

उस दृश्य को देख शिखिमुखी के साथ सब लोग थर-थर काँपने लगे। भाग्यवश उनकी नावें टापू के समीप में थीं, इसलिए वे जल्द ही किनारे पर पहुँच सकें। पर शिथिलालय के पुजारी की नौकाएँ जलसर्प के पीछा करते रहने के कारण जो ऊँची लहरें उठीं, उनमें फँसकर डँवाडोल हो पानी में बहती जाने लगीं।

शिखिमुखी का दल किनारे खड़े हो देख ही रहा था कि जलसर्प ने पुजारी की नाव में अपना सर बढ़ाकर एक को निगल डाला। पुजारी और उसके अनुचर पागलों की तरह चिल्लाते नावों को डांडों द्वारा दूर खेने लगे। जलसर्प उस आदमी को निगलने के लिए पल भर रुका और फिर उनका पीछा करने लगा।

"शिखी, यही अच्छा मौका है। शायद वह दुष्ट पुजारी मेरे बाणों के क्षेत्र में हो, बाण चलाकर देखता हूँ। यह कहते विक्रम ने धनुष और बाण हाथ में लिये और पुजारी की नाव पर निशाना देख बाण छोड़ने लगा। (और है)
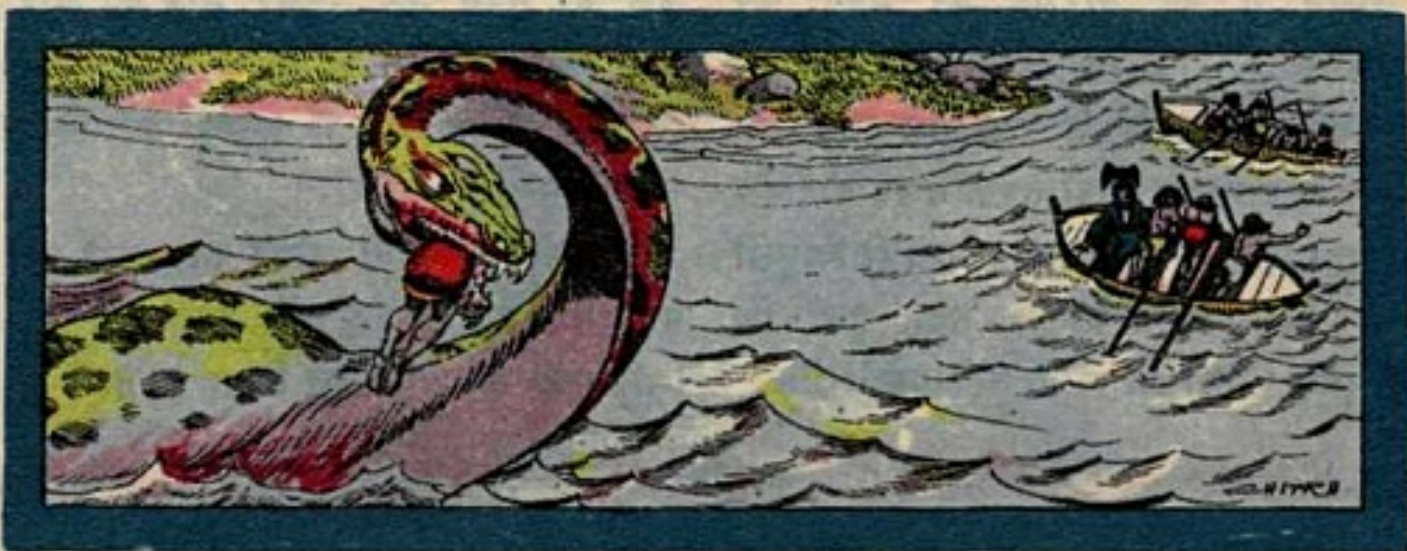
विदूषक का अपराध

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट आया। पेड़ पर से लाश उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा–"राजन्, साँप से खिलवाड़ करनेवाला कभी न कभी खतरे में पड़ सकता है। तुमको सावधान रहने के लिए मैं मद्र देश के विदूषक की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा–"प्राचीन काल में मद्रदेश के राजा के पास एक मशहूर विदूषक था। वह दूसरों को बात की बात में हँसाता ही न था, बल्कि उसे देखते ही लोग हँस पड़ते थे। वह नाटा और पतला था। उसके कान इतने लंबे थे कि उसके हँसने पर उसका मुंह एक कान से दूसरे कान तक फैल जाता था।

वेताल कथाएँ

साबित करता तो उन्हें दण्ड दिया जा सकता था। लेकिन जहाँ केवल संदेह ही किया जाता था, वहाँ पर विदूषक के मजाक़ द्वारा उनके अन्याय कम हो जाते थे। अगर कभी कोई अधिकारी ऐसा दुष्ट कार्य करने का प्रयत्न करता तो विदूषक के परिहास का शिकार होता, तब वह अधिकारी यह सोचकर दुष्ट कार्य न करता कि उसका पता राजा को भी लग गया है। मजाक़ के बहाने विदूषक किसी न किसी रूप में सब की निंदा करता। वह अगर किसी अधिकारी या व्यक्ति की निंदा करता तो उससे जलनेवाले लोग प्रसन्न हो जाते। इस प्रकार विदूषक अनेक प्रकार से अज्ञात रूप में ही राजा का उपकार कर बैठता था। इसीलिए कभी विदूषक राजा का भी मजाक़ कर बैठता तो वह भी चुप रह जाता।
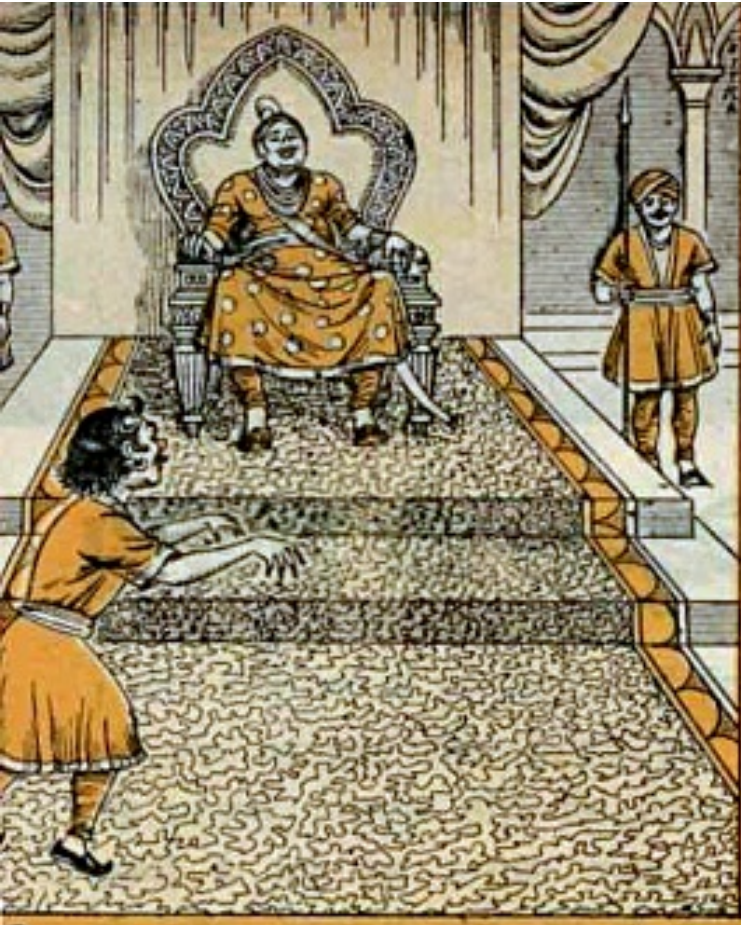
वह बड़ा होशियार था। हास्य कहानियाँ इतनी जानता था कि एक बार कही हुई कहानी दुबारा नहीं कहता था। वह सब की हँसी उड़ाया करता था, यहाँ तक कि वह राजा को भी छोड़ता न था। अपना मजाक़ उड़ाते देखकर भी राजा नाराज नहीं होता था। इसलिए बाक़ी लोग भी मन मसोसकर रह जाते थे। लेकिन सब उससे नाराज थे और उससे डरते भी थे।

विदूषक के जरिये राजा के कई उपकार होते थे। उसके दरबारी अगर कभी अपराध करते और उसे विदूषक

एक दिन राजा की वर्षगांठ मनायी जा रही थी। शाम को तरह-तरह के मनोरंजन के कार्यक्रम प्रदर्शित किये जा रहे थे। नृत्य, विनोद, संगीत और भोज का प्रबंध किया गया था। राजा सभासदों के साथ वार्तालाप कर रहा था। विदूषक

हस्य कथाएँ सुनाते बीच बीच में किसी न किसी व्यक्ति की खिल्ली उड़ाया करता था। सब लोग हँस पड़ते थे।

विदूषक की हँसी-मजाक़ सुनते सब लोग लोट-पोट हो रहे थे। तब वह बोल उठा—"आप सब यह सोचते होंगे कि मुझ से बढ़कर कोई बेवकूफ़ इस संसार में न होगा, मगर मैं जानता हूँ कि मुझ से बड़े बेवकूफ़ हमारे राजा हैं।"

इस पर राजा ठठाकर हँस पड़ा, उसकी देखादेखी सभी लोग हँस पड़े।

"यह बात सच है कि मैं बदसूरत हूँ और राजा खूबसूरत हैं। मगर उनकी सारी खूबसूरत उनके टेढे घुटनों में है। उनके पैर घोड़े पर बैठने पर जैसे होते हैं, उनके चलते समय भी वैसे ही होते हैं।" विदूषक ने कहा। इस पर भी राजा हँस पड़ा।

"हमारे राजा जैसे कंजूस को हम लोग सारी दुनिया में नहीं पा सकते। मुझसे दस लाख गुना ज़मीन-जायदाद राजा को है। लेकिन क्या फ़ायदा? ये मुझसे दुगुना खाना भी नहीं खा सकते।" विदूषक ने व्यंग किया, लेकिन राजा इस बार भी हँस उठा।

"ब्रह्मा ने हमें ऐसे मंदबुद्धिवाले राजा को, ऐसे लोभी, टेढ़े घुटने व गंजे सिरवाले को, राजा बनाया, शायद हमने पिछले जन्म में कोई पाप किया होगा, उसी का यह परिणाम है।" विदूषक ने खिल्ली उड़ाई।

राजा से रहा न गया। वह गरज उठा—"अपनी बकवास बंद करो।" इसके बाद अपने सिपाहियों की ओर मुड़कर बोला—"इस दुष्ट को क़ैद करके कल हमारे सिंह के आगे फेंक दो।"

विदूषक का खून ठण्डा पड़ गया। उसकी समझ में न आया कि उसने कौन

ऐसी बात कही, जिससे राजा नाराज़ हो गया। सिपाहियों ने विदूषक को ले जाकर राजमहल के एक कमरे में उसे क़ैद किया।

दूसरे दिन सवेरे कुछ राजकर्मचारियों ने राजा की सेवा में पहुंच कर निवेदन किया— "महाराज, आप विदूषक को क्षमा कर दीजिये। अगर आप क्षमा करना नहीं चाहते, तो उसे मौत की सज़ा के बदले कोई दूसरा दण्ड दीजिये।"

"मैंने आज्ञा दी कि उसे सिंह को खिलाया जायगा। मैं अपने वचन को बदल नहीं सकता।" राजा ने कहा।

"सिंह के सामने विदूषक फेंक दिया जायगा तो वह उसे खा डालेगा।" कर्मचारियों ने कहा।

"अगर सिंह ने उसे नहीं खाया तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" राजा ने कहा।

"सिंह के पिंजड़े से अगर वह बच निकला तो उसे आप कोई दूसरा दण्ड नहीं देंगे न?" राजकर्मचारियों ने फिर पूछा।

"नहीं, उसे मैं छोड़ दूंगा।" राजा ने समझाया।

राजकर्मचारी कोई ऐसा उपाय सोचने लगे जिससे सिंह उसे न खाये।

राजा का सिंह एक ऐसे कमरे में रखा गया था जिसके चारों तरफ़ लोहे के सींकचों का पिंजड़ा बिठाया गया था। सिंह को खाना खिलाने के लिए एक नौकर नियुक्त किया गया था। विदूषक के कुछ साथियों ने उस नौकर के पास जाकर उसे घूस देकर समझाया—"तुम आज सिंह को इस तरह खिलाओ कि उसे कल भी बिलकुल भूख न लगे।"

सिंह के पिंजड़े के दो दर्वाज़े थे। वे हमेशा बंद रहते थे। नौकर को यह भी समझाया गया कि जब विदूषक पिंजड़े के दूसरे दर्वाज़े के पास आवे तभी वह उसे खोले।

इसके बाद उन लोगों ने विदूषक को सारे इंतज़ाम बताये। लेकिन उसे इस बात का भरोसा न था कि वह जान से बाहर निकल आयगा। उसने अपने मित्रों से कहा–"मैंने आज तक विदूषक की ज़िंदगी बितायी। इसलिए में विदूषक की ही मौत मरूँगा। आप लोग पाँच रंगों वाली पोशाकें तैयार करवा दीजिये। उनमें घुंघरूँ और घंटियाँ बंधवा दीजिये।" विदूषक के कहे मुताबिक़ उसके मित्रों ने पोशाकें तैयार करवा दीं।

विदूषक को दण्ड देने का समय निकट आया। हज़ारों लोग सिंह के पिंजड़े के पास जमा हो गये। राजा ने ठीक समय पर प्रवेश करके आज्ञा दी–"विदूषक को पिंजड़े में ढकेल दो।"

सिपाही विदूषक को ले आये। रंग-बिरंगी पोशाकें पहने, घुंघरूँ बजाते सिपाहियों के साथ ठाठ से चलने वाले विदूषक को देख लोग हँस पड़े। राजा ने भी ज़बर्दस्ती अपनी हँसी को रोका।

सिपाहियों ने देखा कि सिंह एक कोने में लेटा हुआ है। उसने कसकर खा लिया था। विदूषक को सिंह से दो गज़ की दूरी पर से दूसरे दर्वाज़े तक पहुँचना था। ज़रूरत पड़ने पर उस दर्वाज़े को खोलने के लिए नौकर द्वार पर खड़ा हुआ था। विदूषक ने धीरे से एक क़दम आगे बढ़ाया। सिंह उठ बैठा और उसकी ओर ताकने लगा।

विदूषक बंदर की भांति उछलने-कूदने लगा। फिर पल्थियाँ मारते नाचने भी लगा। पिंजड़े के बाहर इकट्ठे हुए लोग हो-हो करके हँसने लगे। ऐसा लगा कि नूपुर और घंटियों की आवाज़ सुनकर घबरा गया है। मौक़ा पाकर विदूषक सिंह की बगल में से दूसरे दर्वाज़े की ओर दौड़ पड़ा। सिंह ने एक क़दम आगे बढ़ा

कर उस पर झपटने की कोशिश की और दूसरे क्षण उस पर झपटा भी, मगर इस बीच में विदूषक दूसरे द्वार तक पहुँच ही गया। दर्वाज़ा खुलते ही वह जल्दी बाहर चला आया।

विदूषक की जान बच गयी। इस पर सब को प्रसन्नता हुई। राजा के मन में भी यही विचार था कि विदूषक की जान बचे। इसके बाद बड़ी मुश्किल से राजा ने विदूषक को अपने दरबारी बनाने को मान लिया। मगर इसके बाद उसने कभी किसीको नहीं हँसाया। इसलिए ऐसा प्रतीत हुआ कि असली विदूषक सिंह के मुँह में चला गया हो।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा– "राजन्, विदूषक ने कौन-सा ऐसा अपराध किया था, जिससे नाराज़ होकर राजा ने उसे सिंह के पिंजड़े में फेंकवा दिया? विदूषक के मज़ाक़ करने पर हमेशा हँसने वाला राजा अचानक उसपर नाराज़ क्यों हो गया? यह बात जानते हुए भी न बताओगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने उत्तर दिया– "विदूषक ने राजा को टेढ़े घुटनोंवाला, मंद बुद्धिवाला तथा लोभी बताया। शायद ये सब झूठ हो सकते हैं। इसलिए राजा ने भी सब के साथ हँस दिया। लेकिन विदूषक ने राजा को गंजा सरवाला बताया, यह बात सही हो सकती है! इसी बात पर राजा को विदूषक पर क्रोध आया। बाक़ी बातों पर राजा इसके पहले ही हँस पड़ा था। विदूषक शायद उस वक़्त यह बात भूल गया कि मज़ाक़ के लिए सही सच्ची बात नहीं बतानी चाहिए। यही शायद उसकी ग़लती हो सकती है।"

राजा के इस प्रकार मौन-भंग होते ही बेताल शव के साथ ग़ायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
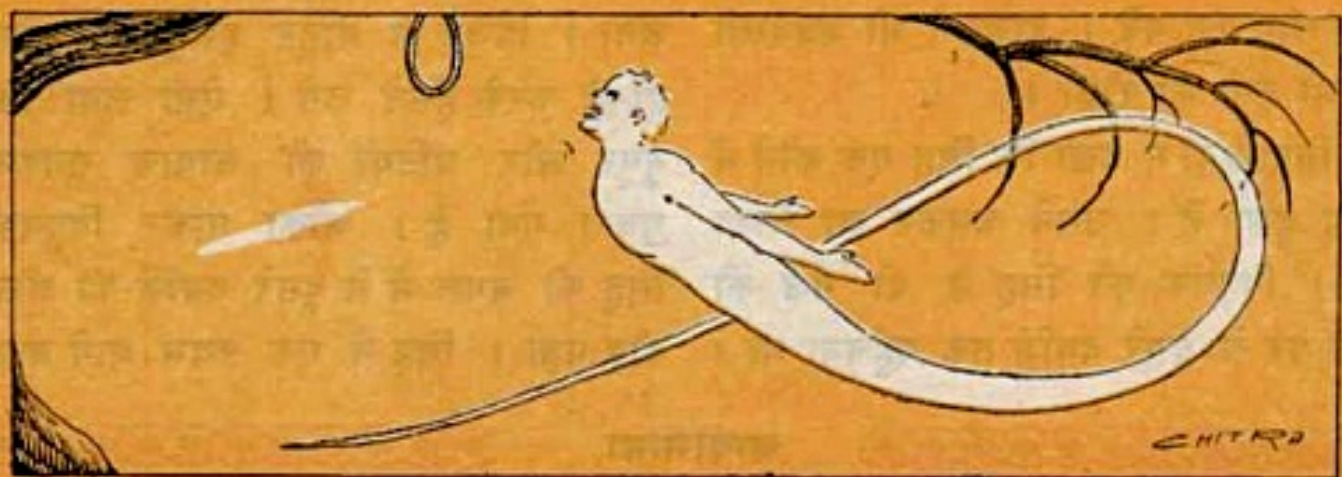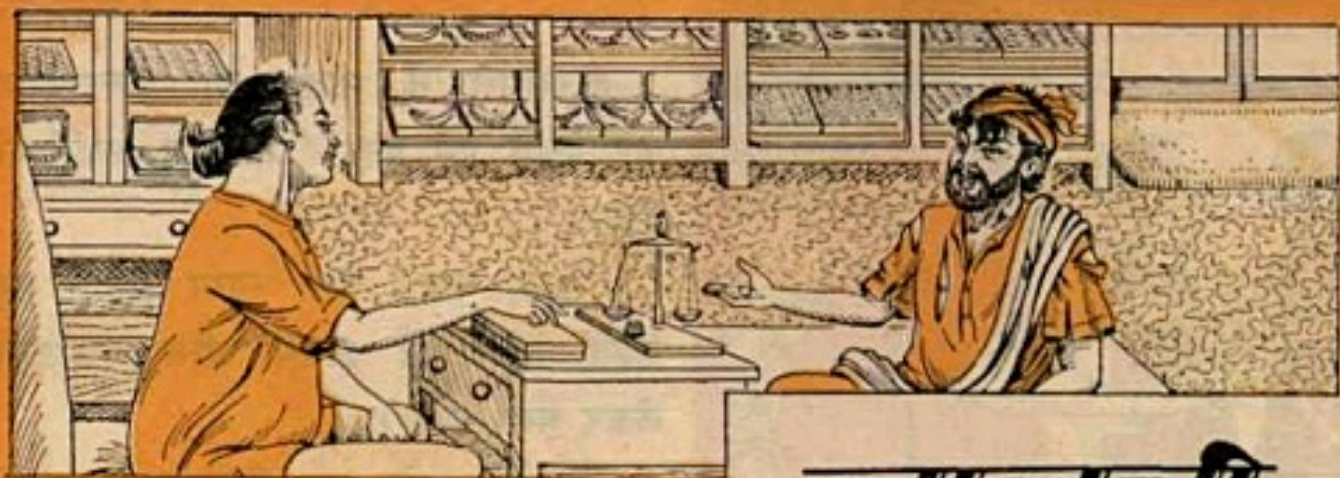
लालची

विलासपुर नामक नगर में एक जौहरी रहा करता था। उसके पिता ने समुद्री व्यापार कर के खूब धन कमाया और उस नगर के हीरों के व्यापारियों में बड़ा मशहूर हो चुका था। फिर भी वह न्याय और सचाई के लिए भी प्रसिद्ध था। वह अगर किसी हीरे का मूल्य लगाता तो कोई उसे गलत नहीं बता पाता था। रत्नों को परखने में भी वह बड़ा कुशल था।

उस व्यापारी का पुत्र हीरालाल भी अपने पिता से कम निपुण न था। लेकिन वह बड़ा लालची था। जहाँ भी मौक़ा मिलता तो वह धोखा देने से न चूकता। इसलिए उसने अपने पिता के व्यापार में से दसवाँ हिस्सा व्यापार किया और दस गुने फ़ायदा उठाया। नगर के अन्य व्यापारी उस से नफ़रत करते थे।

एक दिन हीरालाल की दूकान में अधेड़ उम्र का एक आदमी आया और उसने एक क़ीमती मोती बेचने की इच्छा प्रकट की। उसने हीरालाल से कहा–"सेठजी, मेरी वेष-भूषा देखकर यह न समझो कि मैं जन्म से ही कंगाल हूँ। मेरे दिन फिर गये हैं। मैंने ऐसे मोती कई मित्रों को भेंट में दिये हैं। मगर दिन हमेशा एक से नहीं होते। अब क्या बताऊँ? मेरे पास यही एक मोती बचा है। जब खाने को भी कुछ न रहा तो लाचार होकर मैं इसे बेचने जा रहा हूँ। इसकी क़ीमती मुझे तुमको बताने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसलिए मुझे उचित दाम दे दो।"

हीरालाल ने सोचा कि धोखा देने के लिए यही अच्छा मौक़ा है। वास्तव म वह मोती बड़ा क़ीमती था। उसे जहाँ तक हो सके, कम दाम देकर खरीदने के लिए बड़ा

रवीन्द्रकुमार

अच्छा मौक़ा हाथ लगा है। जो आदमी खाने को तरसता है वह ज्यादा मोल-भाव भी न कर सकेगा। इसलिए हीरालाल ने कहा—"जैसा तुम बताते हो, यह कोई क़ीमती मोती नहीं है। इसे खरीदने पर भी मैं विशेष फ़ायदा न उठा सकूँगा। फिर भी बताओ, तुम कितने में बेचना चाहते हो?"

गरीब आदमी ने यह बात सुनकर चिंता प्रकट करते हुये कहा—"ऐसा अभिनय न करो कि तुम इसका मूल्य नहीं जानते हो? मैं इस बात के लिए तैयार हो कर ही आया हूँ कि तुम न्यायपूर्वक जो भी दाम लगाओ, वह लेते जाऊँ!"

हीरालाल ने मोती को उलट-पलट कर देखते हुये कहा—"मैं बीस अशर्फ़ियाँ दूँगा।"

"वाह, वाह! कैसा न्याय है!" यह कहते वह गरीब आदमी बीस अशर्फ़ियाँ लेकर चला गया।

इस घटना के कुछ दिन बाद, दुपहर के समय दो औरतें हीरालाल की दूकान के पास खड़े हो बातचीत करने लगीं। उनकी बातचीत को सुनकर हीरालाल ने समझा कि वे बड़े ही अमीर घराने की हैं और सास और बहू हैं। बहू के हाथ में गोद का बच्चा भी था।

"सासजी, लगता है कि धनगुप्त हमें समय पर गहने न देकर धोखा दे रहा है?" बहू ने कहा।

"आज तक हमने जो भी चाहा, बनाकर दिया। इस बार ही वह वक़्त पर न दे पाया। कहता है कि हमारे लिए जो बढ़िया क़िस्म के हीरे चाहिये, वे अभी तक उसे प्राप्त न हुये। न मालूम, बात सही भी हो।" सास ने समझाया।

"शादी निकट आ गयी है! उसे हीरे कब मिलेंगे और वह हमें कब बनाकर देगा?" बहू ने कहा।

सास-बहू की बातें सुनने पर हीरालाल को लगा कि कोई बड़ा सौदा हाथ लगनेवाला है! उसने उन औरतों के पास जाकर प्रणाम किया। उनको भीतर निमंत्रित करते हुये कहा–"मेरी दूकान में क़ीमती हीरे हैं। जवाहरात हैं। आप लोग एक बार देखिये तो सही! हम लोग और किस लिए बैठे हैं? आप जैसे लोगों के वास्ते ही तो हैं?"

"बात कोई खास नहीं है। मेरी भतीजी का विवाह मंत्री के पुत्र के साथ पक्का हो गया है। कोई बढ़िया भेंट न दे तो बुरा होगा। हमने हीरों की माला बनाने के लिए धनगुप्त को कहा। वह समय पर न देकर हमको सता रहा है।" सास ने कहा।

"माई जी, मेरी दूकान में महारानियों के पहनने लायक़ हीरों की मालाएँ तैयार हैं। मैं अभी आपको दिखाये देता हूँ।" यह कहते हीरालाल ने एक हार उनके सामने रखा।

"चाहे इसका मूल्य जो भी हो, हम दुलहिन को जो भेंट देते हैं, वह उसे पसंद होनी चाहिये। मैं अभी उस लड़की को दिखा लाती हूँ। मेरे लौटने तक मेरी बहू यही रहेगी। तुम मेरे साथ अपने नौकर को भेज दो।" सास ने समझाया।

"इस में क्या बात हैं? आप वधू को दिखा लाइये।" हीरालाल ने कहा। सास के साथ दूकानदार का नौकर भी चला गया।

उनके जाने पर बहू ने दूकानदार से कहा–"क्या आपके पास बढ़िया क़िस्म के मोती हैं? मैं दुलहिन को एक अंगूठी बनवाना चाहती हूँ।"

हीरालाल ने गरीब के पास जो मोती खरीदा था, उसे और मोतियों के साथ

मिलाकर बहू के हाथ दिया। बहू ने गरीब के दिये मोती को चुन लिया और उसका दाम पूछा।

"यह बड़ा क़ीमती मोती है। इसका मूल्य दो हज़ार अशर्फ़ियाँ है।" दूकानदार ने कहा।

इतने में दूकान के बाहर कोलाहल मच गया। दो आदमी तलवारों से लड़ने लगे। लोगों की भीड़ लग गयी। हीरालाल भी दूकान के बाहर आकर तमाशा देखने लगा। इतने में चार-पाँच सिपाही वहाँ आ पहुँचे। लड़नेवालों को बन्दी बनाया। भीड़ छंट गयी। हीरालाल की दूकान के सामने झगड़ा हुआ था, इसलिए वह वहीं पर खड़ा रहा।

"तुमने इन लोगों को झगड़ते देखा। गवाही देने हमारे साथ चले चलो।" सिपाहियों ने ये शब्द कहते हीरालाल को अपने साथ ले लिया।

"दूकान की मैं देखभाल करती रहूँगी, तुम हो आओ।" बहू ने दूकानदार से कहा।

अपरिचित नारी को दूकान की देखभाल पर छोड़कर जाना हीरालाल को कतई अच्छा न लगा, लेकिन लाचार होकर उसे यह काम सौंपना पड़ा।

अदालत में न्यायाधीश के सामने हीरालाल अंट-संट जवाब देने लगा। उसका मन दूकान पर ही लगा था। न्यायाधीश को हीरालाल की बातें झूठी मालूम हुईं। इसलिए उसने कहा—"तुम भी अपराधी मालूम होते हो!" इसके बाद बड़ी देर तक उसे आदालत में रोककर इधर-उधर के सवाल किये, तब उसे भेज दिया।

हीरालाल ने लौट कर देखा तो दूकान पर बहू नहीं थी। एक छोटा शिशु पास में लिटाया गया था जिस पर कपड़ा लपेटा हुआ था। दूकान का

नौकर भी लौटा न था। ये सारी बातें दूकानदार को विचित्र मालूम होने लगीं।

इतने में नौकर ने लौट कर कहा—"सरकार, यह सब सरासर धोखा है।" उसने बताया कि वह सास कहलानेवाली औरत के साथ बहुत दूर तक चला गया। उस औरत ने एक मकान के आंगन में प्रवेश करके बताया—'तुम यहीं रहो, मैं अभी लौट आती हूँ।' वह उस औरत का इंतज़ार करता रहा, लेकिन उसके लौटते न देख नौकर ने भीतर जाकर देखा। वह एक सराय थी। उसके चारों तरफ़ दर्वाज़े थे। उसने बहुत ढूंढा, उस औरत का पता न लगते देख अपने मालिक को यह हाल बताने को लौट आया।

नौकर की बातें सुनने पर हीरालाल का कलेजा बैठ गया। उसने शिशु पर लपेटा कपड़ा हटाकर देखा तो वहाँ पर शिशु न था, बल्कि मिट्टी का खिलौना था।

घबड़ाये हुए दूकानदार ने गहनों की जांच की। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया। दूकान के सभी क़ीमती गहने ग़ायब थे।

फिर क्या था, हीरों का व्यापारी कंगाल बन गया। किसी भी व्यापारी ने उसकी मदद न की। उसने घर-द्वार बेच दिया। छोटी दूकान खोलकर बैठ गया।

एक दिन एक धनी व्यक्ति ने घोड़े पर आकर दूकान के सामने घोड़े को रोक दिया। उसने कहा—"अरे, हीरों का व्यापारी नमक का व्यापारी बना मालूम होता है। क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना? तुमने मुझसे बीस अशर्फ़ियों में एक मोती खरीदा, याद है न? मेरा मोती मुझे वापस मिल गया है। आज से ही सही, ईमानदारी के साथ व्यापार करो। जानते हो? मेरे राज्य में अन्याय होगा तो मैं सहन नहीं कर सकता!" ये बातें कहकर वह व्यक्ति आगे बढ़ गया।
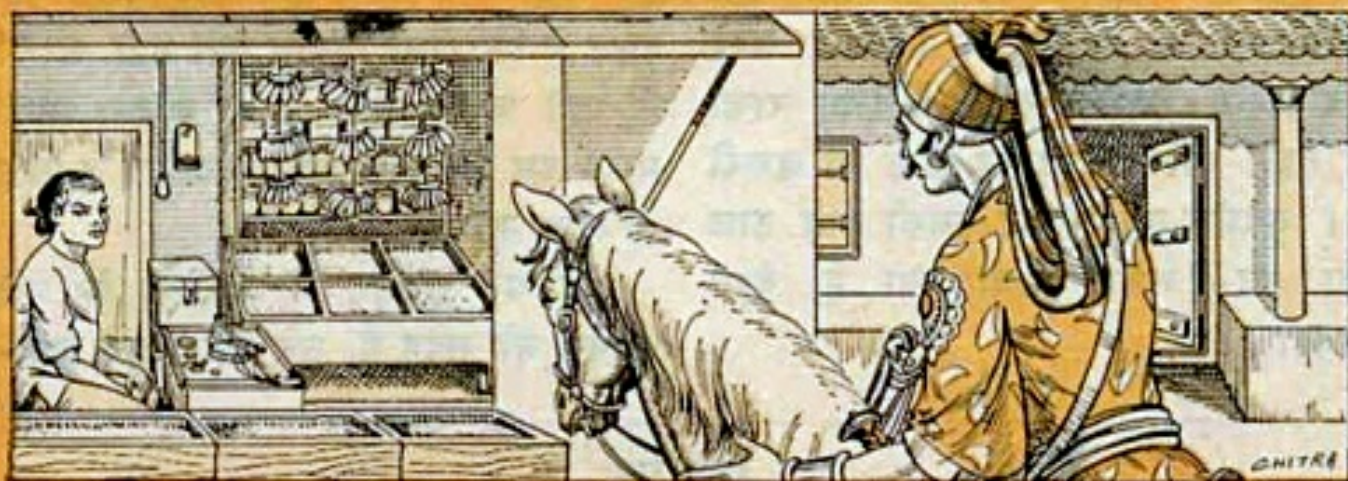
दरबारी नाई

पुष्कलावती नदी के किनारे पर एक छोटा सा राज्य था। अचानक उसका राजा मर गया। इसलिए उसका पुत्र सुदर्शन छोटी उम्र में ही राजा बन बैठा। शासन-कार्य में मंत्री, सेनापति वगैरह सुदर्शन की मदद करते थे। लेकिन उसका अंतरंग सलाहकर दरबारी नाई था।

नाई अधेड़ उम्र का था। सुदर्शन का पिता अपने जीवनकाल में रहस्यों को मंत्री से भी गुप्त रख कर नाई को बता देता और उसकी सलाह पाकर लाभ उठाता था।

सुदर्शन के गद्दी पर बैठने के बाद मंत्री वगैरह ने उसे सलाह दी कि वह जल्द विवाह करे, क्योंकि राज्य के लिए राजा ही नहीं, बल्कि रानी का होना भी जरूरी है। सुदर्शन यह कहकर उनकी बात टाल देता था–"अभी जल्दी क्या है, देखा जायगा।"

बात यह थी कि सुदर्शन के मन में विवाह करने की इच्छा तो थी, लेकिन वह औरतों पर संदेह करता था। उसका ख्याल था कि जो कन्यायें सुंदर होती हैं, उनका चरित्र अच्छा नहीं होता, जो सुंदर और सुशील होती हैं, वे घमण्ड़ी और झगड़ालू होती हैं। इन सब गुणों वाली कन्या का चुनाव करना नामुमक़िन है। मगर ये बातें मंत्री वगैरह से बता देना उचित न होगा।

इसी उधेड़बुन में दिन बीतने लगे। एक दिन नाई ने सुदर्शन की दाढ़ी बनाते हुये कहा–"सरकार, हर कोई मुझसे यही पूछते हैं कि राजा विवाह क्यों नहीं करते? मैं यही जवाब देता हूँ कि मैं क्या जानूं! मगर इस से कोई अच्छा जवाब दे पाता तो लोग खुश हो जाते।"

इस पर सुदर्शन ने नारियों के प्रति अपना जो संदेह है, उसे बताते हुये पूछा–

सुनीलराय

"अरे, सुनो तो! मुझे जाति-पाँति से कोई मतलब नहीं, जो कन्या देखने में सुन्दर हो, गुणवती हो, ऐसी कन्या का पता कैसे लगावे? तुम जानते हो तो बताओ! ऐसी कन्या मिल जाय तो मैं इसी क्षण विवाह करूँगा।"

नाई ने पल-भर सोचकर जवाब दिया– "अगर आप की यही समस्या है तो उसका एक उपाय है। मेरे पास एक आईना है। उसमें किसी को भी देखे, तो उसकी सारी बुराइयाँ दीख पड़ेंगी। आप अगर किसी कन्या से विवाह करना चाहेंगे तो मुझे मौक़ा दिलाइये, मैं उस आईने में उसके सारे गुण देखकर बता दूँगा।"

नाई की बातें सुनकर राजा की हिम्मत बंध गयी। उसने कहा–"अगर तुम मेरे योग्य पत्नी का पता लगा सको, तो मैं जिंदगी-भर तुम्हारा एहसान भूल नहीं सकता।" राजा ने कहा।

उसी दिन राजा ने दरबार में घोषणा की कि उसने विवाह करने का निश्चय किया है। शाम तक यह खबर सारे शहर में आग की तरह फैल गयी। राजा जाति और गरीब-अमीर का ख्याल न रखेगा। वह सिर्फ़ सुन्दर और गुणवती कन्या चाहता है। यह खबर सुनते ही जो कन्याएँ अपने को सुंदर मानती थीं, वे सब आईने में अपने चेहरों को देख अपने आप प्रश्न करने लगी–"क्या यह चेहरा रानी बनने लायक़ है।" मगर दूसरे दिन यह खबर शहर में फैल गयी कि राजा जिस कन्या के साथ विवाह करने जा रहा है, उसे दरबारी नाई अपने जादूवाले आईने में देखेगा। तब उन कन्याओं के सारे रहस्य मालूम हो जायेंगे।

यह बात सुनते ही रानी बनने की इच्छा रखनेवाली कन्याओं के कलेजे बैठ गये। रनिवास की बात भगवान जाने,

उनका रहस्य क़मबख़्त नाई के सामने प्रकट हो जाय तो इज़्ज़त चली जाय।

देखते-देखते दस दिन बीत गये, मगर राजा से विवाह करने एक भी कन्या आगे न आई।

"अरे नाई, आज तक तुम लोगों ने मुझे विवाह करने को सताया, लेकिन एक भी कन्या विवाह करने को तैयार न हुई, क्या बात है?" राजा ने नाई से पूछा।

"सरकार! मेरे जादू के आईने की बात सब कोई जानते हैं। उस में अपना चेहरा दिखाने की कैसी हिम्मत होनी चाहिये! मगर भूल से मानवी बनकर पैदा हुई देवी आपके साथ विवाह कर सकेंगी, मामूली नारी को आपके साथ में थोड़े ही गद्दी पर बैठने दूंगा?" नाई ने दर्प के साथ कहा।

"तो तुम एक काम करो। एक महीने तक देशाटन करके अपने आईने को पसंद आने वाली कन्या को लेती आओ। लगता है, हमारे नगर की कोई कन्या मेरी पत्नी बनने लायक़ नहीं है।" राजा ने कहा।

देशाटन करने के लिए आवश्यक धन राजा से लेकर नाई चल पड़ा। वह हर एक गाँव में जाता, राजा का आज्ञापत्र दिखाकर गाँव के लोगों से बताता कि वह राजा के लिए योग्य वधू की खोज़ करता है। तब पूछता—"आप बताइये कि इस गाँव में रानी बनने लायक़ कोई कन्या है?"

सब कोई अलग-अलग कन्या का नाम बताते। एक का बताया नाम दूसरा काट देता। किसी गाँव के प्रमुख व्यक्तियों ने मिल कर एक साथ किसी एक लड़की का नाम न बताया।

इस प्रकार अनेक गाँवों में कन्या की खोज़ करते नाई बहुत दूर चला गया। एक दिन दुपहर को वह एक पहाड़ी प्रदेश में पहुँचा। उसे भूख और प्यास सता रही

थी। पहाड़ के ऊपर भेड़ों की रेवड़ दिखाई दी। उसे चरानेवाले आदमी की खोज करते नाई जब पहाड़ पर चढ़ा तब उसे एक शिला की छाया में बैठी एक कन्या दिखाई दी।

"बेटी, मुझे बड़ी भूख लगी है। पास में कोई गाँव दिखाई नहीं देता। खाने को तुम्हारे पास कुछ है?" नाई ने उस कन्या से पूछा।

"पहाड़ के उस तरफ़ एक गाँव है। मगर तुम भूखे हो, कैसे वहाँ तक पहुँच सकते हो? मेरे पास जो खाना है, उसे ही खा लो, दादा।" ये बातें कहते उस कन्या ने ज्वार की रोटियाँ और सब्ज़ी नाई के सामने रख दी। खाना खाकर नाई ने प्यास भी बुझायी। तब बोला— "बेटी, तुमने मेरी जान बचाई।" यह कहकर नाई ने उस कन्या की ओर देखा तो वह चकित रह गया। उसका चेहरा चन्द्रमा जैसा सुंदर था। बड़ी-बड़ी आँखें, सुंदर कपोल, काले व लंबे बाल। फ़टे कपड़े पहने रहने पर भी वह कन्या पार्वती जैसी सुंदर थी।

"वाह! इस कन्या के बाल सँवार कर, रेशमी वस्त्र पहनाये और गहने सजाने पर यह किसी भी राजकुमारी से कम सुंदर न

दीखेगी। इसका स्वभाव भी बड़ा अच्छा है। भोली-भाली है।" नाई ने अपने दिल में सोचा।

इसके बाद नाई ने उस कन्या से पूछा- "बेटी, मैं तुम्हारी शादी हमारे राजा के साथ करूँगा। मान जाओगी न?"

"दादा, क्या राजा की औरत बनना हम जैसे ग़रीबों के भाग्य में भी बदा है?" कन्या ने पूछा।

"तुम्हें वैसी कोई तक़लीफ़ न होगी। मेरे साथ चलो। मैं तुमको राजा को दिखाऊँगा।" नाई ने कहा।

उस कन्या ने नाई की बात मान ली। दोनों राजमहल में पहुँचे। नाई ने अंत:पुर की दासियों के द्वारा उस कन्या को नहलवा कर सजवाया। दासियों ने उसके जूड़े में फूल सजाये। सारे शरीर में सुगंध द्रव्यों का लेपन किया। सुंदर गहने पहनवाये। अच्छे कपड़े पहना कर नाई के सामने लायी गयी। नाई अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर पाया। क्या यही कन्या भेड़ चरानेवाली है?

नाई ने घर से एक आईना लाकर उसमें उस कन्या के प्रतिबिंब को राजा को दिखाया और बोला-"महाराज! देखिये! इस कन्या में कोई ऐब है?" सुदर्शन ने आईने में कन्या के प्रतिबिंब को देखा, उस कन्या को देख मुग्ध हो उसके साथ विवाह किया। विवाह के समय नाई को एक अच्छी जागीर दी गयी। उसे जो भेंटें दी गयीं, उनकी कोई गिनती न थी।

सब का नाई के आईने पर विश्वास जम गया। बड़े-बड़े लोगों ने अपनी पत्नियों के प्रतिबिंब आईने में देख उनकी असलियत जाननी चाही। मगर नाई ने उन्हें वैसा मौक़ा न दिया। उसने सबको यही जवाब दिया-"क्या बताऊँ! बहुत बढ़िया आईना था, टूट गया है!"

समुद्री कन्याएँ

अल्जीरियर्स नामक शहर में अब्दुल्ला नामक एक युवक था। उसके पिता ने व्यापार करके खूब धन कमाया। जब अब्दुल्ला का पिता मर गया, तब वह अपने दोस्तों की कुसंगति में पड़कर पैसे पानी की तरह बहाने लगा। कुछ ही दिनों में उसका सारा धन कपूर की भांति उड़ गया।

अब्दुल्ला अब ग़रीब था। उससे कुछ करते न बना। लोगों की आँख बचाकर ज़िंदगी बिताने के इरादे से वह घोड़े पर सवार हो मध्यधरा प्रदेश की ओर चल पड़ा।

रास्ते में एक भयंकर जंगल पड़ा। एक जगह एक दृश्य को देख अब्दुल्ला चकित रह गया। एक ऊँचे पेड़ की डाल से एक औरत औंधे मुँह लटक रही थी।

अब्दुल्ला ने उस औरत के पास जाकर देखा। वह बड़ी सुंदर थी। उसकी गर्दन पर चोट थी। उस चोट से ख़ून की तीन बूँदें नीचे रखी हुई थाली में गिर गयीं। अब्दुल्ला ने झुक कर देखा तो उसे साफ़ मालूम हो गया कि वे तीनों माणिक हैं। उस नारी के शरीर को छूने का उसने इसलिए प्रयत्न किया कि उसमें प्राण है या नहीं, लेकिन उससे न बना। उसे लगा कि उस नारी के चारों तरफ़ कोई ताक़त अज्ञात रूप में खड़ी है।

इसके बाद अब्दुल्ला ने थाली में से एक माणिक उठाया और उसे अपनी पगड़ी में छिपाया। यह सोचते वह पास के एक नगर की ओर चल पड़ा कि कोई यह कहे कि यह सब झूठ है, तो मैं उसे सत्य बताते हुये यह माणिक दिखाऊँगा।

उस नगर के सुलतान की एक बेटी थी। वह खूबसूरत तो थी ही, साथ ही मंत्र-तंत्र और ज्योतिष भी जानती थी। सुलतान के

अल्जीरिया की लोक-कथा

पास एक वज़ीर था। वज़ीर के लड़के के साथ सुलतान की बेटी की शादी पक्की हो गयी थी। लेकिन सुलतान की बेटी ने यह शादी करने से इनकार किया और अपने बाप से कहा–"मुझ से जो युवक शादी करना चाहता है उसे मेरी सभी इच्छाओं की पूर्ति करनी होगी। अगर वज़ीर का बेटा मेरी इच्छाओं को पूरा करेगा तो मैं उसके साथ शादी करूँगी।"

"तुम्हारी इच्छाएँ क्या हैं?" सुलतान ने अपनी बेटी से पूछा।

"पहली इच्छा है, मुझे तीन माणिक चाहिये। मुझसे जो शादी करना चाहता है उसे वे तीनों माणिक लाने होंगे।" सुलतान की बेटी ने कहा।

"तुम पागल तो नहीं? हमारे देश में माणिक कहाँ मिलते हैं?" सुलतान ने कहा।

"चाहे, जहाँ से भी लावे, मुझे कोई मतलब नहीं। लेकिन मुझे वे माणिक चाहिये।" सुलतान की बेटी ने कहा।

अपनी बेटी की ज़िद देख कर सुलतान ने यह ढिंढोरा पिटवाया कि जो लोग माणिक ले आयेंगे, उन्हें बढ़िया इनाम दिये जायेंगे। अब्दुल्ला ने ढिंढोरा सुना। सुलतान के पास जाकर सौंपकर कहा–"मेरे पास यही एक माणिक है।"

सुलतान की बेटी उस माणिक को देख बहुत खुश हुई और बोली–"यह तो बड़ा सुंदर है। मगर एक से मेरा काम न चलेगा। मुझे तीन माणिक चाहिये।"

"एक ही मिला है। दो और कहाँ से लाया जायगा?" सुलतान ने कहा।

"जो एक माणिक लाया, वही दो और ला सकता है?" बेटी ने जवाब दिया।

सुलतान ने अब्दुल्ला को आदेश दिया–"और दो माणिक चाहिये। वे भी लाओगे तो तुम्हें मुँह माँगा इनाम दूँगा। वरना तुम्हारा सर उड़ा दिया जायगा।"

"जी सरकार!" यह कह कर अब्दुल्ला लौटा आया। अपनी दूकान बंद कर हाथ में तलवार लिये घोड़े पर सवार हो जंगल की ओर चल पड़ा। वह नारी उसी प्रकार पेड़ से लटक रही थी।

इतने में बिजली चमकी, बादलों का गर्जन हुआ। उस नारी के सामने एक मांत्रिक काले कपड़े पहने प्रत्यक्ष हुआ।

मांत्रिक ने उस नारी को पेड़ से उतारा! ज़मीन पर लिटा कर मंत्र-दण्ड को उसकी गर्दन पर छुआ दिया। तुरंत वह उठ कर खड़ी हो गयी। वह अब दर्जनों गुना सुंदर दीख रही थी। मांत्रिक ने उस नारी से पूछा–"अब भी सही, तुम मेरे साथ शादी करने को तैयार हो?"

"मेरे चाहे हजार टुकड़े कर दो, तो भी मैं तुमसे शादी नहीं करूंगी।" उस नारी ने जवाब दिया।

मांत्रिक नाराज़ हो गया। उसने ज़ोर से उस नारी को कोड़े से पीटा। फिर वह दुबारा कोड़ा उठाकर उस नारी को मारने जा रहा था। तब अब्दुल्ला ने मांत्रिक के पीछे जाकर अपनी तलवार से उसकी गर्दन काट दी। वह नारी दौड़कर आयी और अब्दुल्ला से गले लगकर बोली– "आपने मेरी रक्षा की। मैं ज़िन्दगी-भर आपकी गुलाम बनकर रहूँगी।"

उस नारी ने अब्दुल्ला को अपनी सारी कहानी सुनायी–उसका नाम माणिक है। वह एक समुद्री राजा की बेटी है। एक साल पहले यह मांत्रिक उसे अपने जादू के बल पर उठा ले आया और रोज़ उसके साथ शादी करने को ज़बर्दस्ती कर रहा है। उसे पेड़ से लटका कर उसकी गर्दन पर घाव कर देता है। उससे निकलनेवाली खून की बूंदें माणिक बन जाती हैं, तो उन्हें इकट्ठा कर ले जाता है।

"भगवान की दया से तुमको छुटकारा मिल गया है। इसलिए क्या तुम मेरे साथ शादी करोगी?" अब्दुल्ला ने माणिक से पूछा।

"जरूर शादी करूँगी। मगर पहले शादी का सारा इंतजाम करना है। मुझे समुद्र के किनारे ले जाइये।" युवती ने कहा। उस युवती को अपने घोड़े पर बिठा कर अब्दुल्ला उसे समुद्र के किनारे ले गया। वह युवती यह कहकर समुद्र में कूद पड़ी कि उसके लौटने तक अब्दुल्ला किनारे पर ही रहे।
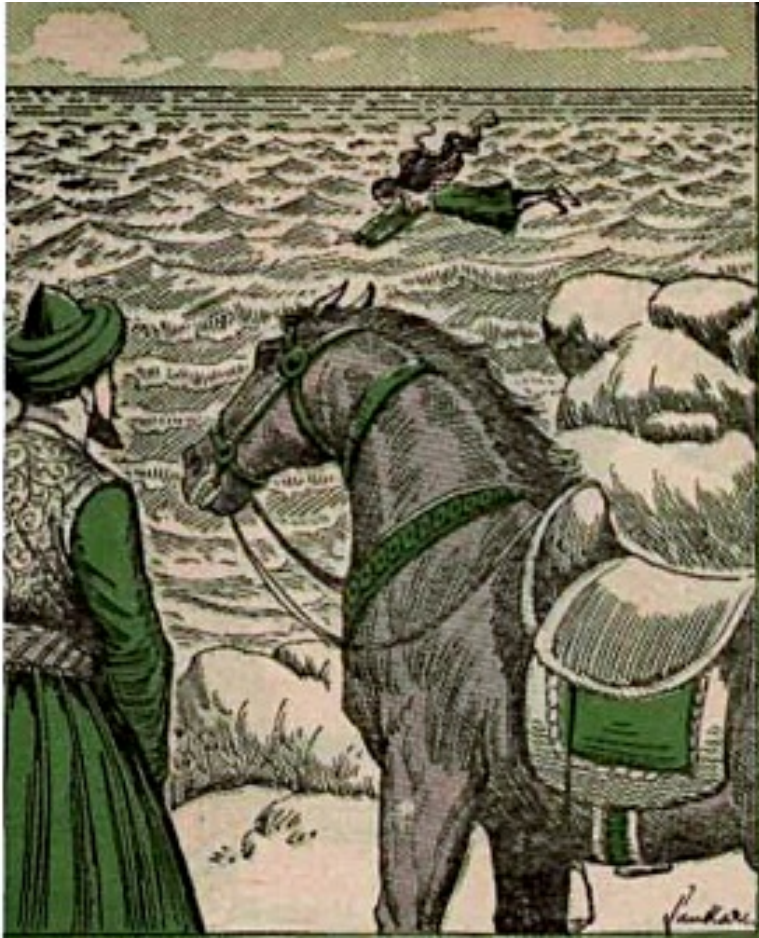
कई घंटे बीत गये। अब्दुल्ला एक दम निराश हो गया था कि वह अब वापस न लौटेगी। इतने में समुद्र पर एक जुलूस सा निकला। घुड़सवार, पालकियाँ, कहार और सिपाही भी आ पहुँचे। एक पालकी के द्वार खुले थे। उसमें सोने के जरीदार वस्त्र पहने माणिक बैठी थी। अब्दुल्ला माणिक को सदल-बल अपने घर ले आया। उसके साथ ठाठ से शादी करके दावत और मनोरंजनों के साथ एक सप्ताह बिताया।

अब्दुल्ला के लौटने का समाचार जानकर सुलतान ने उसे बुला भेजा और पूछा— "क्या तुम दो माणिक ले आये?"

"हुजूर! मैं अपनी शादी की गड़बड़ में माणिकों की बात बिलकुल भूल गया। मुझे एक महीने की मियाद दीजिये। मैं जरूर ला दूंगा।" अब्दुल्ला ने कहा।

"एक महीने के अन्दर तुम दो माणिक नहीं लाओगे तो तुम्हारा सर उड़ा दिया जायगा।" सुलतान ने आदेश दिया।

अब्दुल्ला घर लौटा। उसे चिंता में डूबे देख उसकी औरत ने कारण पूछा।

अब्दुल्ला ने माणिकों की बात बतायी। उसने झट एक छुरी लेकर अपने हाथ पर घाव किया। उसमें से खून की दो बूंदें गिरीं। झट वे बूंदें माणिक बन गयीं।

उन्हें ले जाकर अब्दुल्ला ने सुलतान को सौंप दिया।

सुलतान ने दो माणिक अपनी बेटी को देकर पूछा–"तुम्हारी इच्छा अब पूरी हो गयी है न?"

"एक इच्छा पूरी हो गयी। मगर एक और इच्छा है। एक माला के बराबर बड़े-बड़े मोती चाहिये। जो मुझसे शादी करना चाहता है, उसे मोती भी लाना होगा।" सुलतान की बेटी ने कहा।

"इस देश में मोती कहाँ मिलते हैं?" सुलतान ने अपनी बेटी से पूछा।

"जिसको माणिक मिल सकते हैं, उसे क्या मोती नहीं मिल सकते?" सुलतान की बेटी ने कहा।

सुलतान ने फिर अब्दुल्ला को बुला भेजा और कहा–"मेरी बेटी के लिए मोतियों की एक माला चाहिए। उस माला के लिए आवश्यक मोती ले आओ। तुम्हें एक महीने की मोहलत देता हूँ।"

"जी हुज़ूर" कह कर अब्दुल्ला घर लौट आया। इस नयी विपत्ति का परिचय भी अपनी पत्नी को कराया।

"यह कौन बड़ी बात है? मोती भी देंगे।" यह कहकर उसने एक काग़ज़ पर कुछ लिख कर अब्दुल्ला के हाथ दे कहा–"इस काग़ज़ को समुद्र पर फेंक दो और जवाब के इंतज़ार में बैठे रहो।"

अब्दुल्ला समुद्र के किनारे पहुँचा। माणिक का लिखा पत्र समुद्र पर फेंक कर वहीं खड़ा रह गया। थोड़ी देर में समुद्र पर से एक और जुलूस निकला। इस बार पालकी में माणिक जैसी एक और कन्या बैठी थी। उसका नाम मोती था।

अब्दुल्ला मोती को भी अपने घर ले आया और अपनी पहली पत्नी की अनुमति लेकर मोती के साथ भी शादी की।

"मेरी एक और इच्छा है। उसकी पूर्ति करनेवाले के साथ मैं ज़रूर शादी करूँगी। मुझे अण्डे के बराबर कस्तूरी चाहिये।" सुलतान की बेटी ने कहा।

सुलतान यह भी नहीं जानता था कि कस्तूरी क्या होती है। ऐसी हालत में उसे लावे कौन? उसने अब्दुल्ला को फिर खबर भेजी और आदेश दिया कि एक महीने के अन्दर अ डे के बराबर कस्तूरी न लाओगे तो तुम्हारा सर उड़ा दिया जायगा।

इस बार माणिक ने अब्दुल्ला को एक और पत्र देकर समुद्र के किनारे भेजा। इस प्रकार अपनी दूसरी बहन कस्तूरी को भी मंगवा कर उसकी भी शादी अब्दुल्ला के साथ कर दी। अब्दुल्ला ने देखा कि उस युवती के शरीर से हमेशा कस्तूरी की गंध आती रहती है।

माणिक और मोती सगी बहनें थीं। शादी का उत्सव खतम होने पर अब्दुल्ला ने माणिक को सुलतान का आदेश याद किया। तब माणिक ने अपनी बहन से झूठमूठ कोई झगड़ा किया और आखिर उसके गाल पर तमाचे मारे। तमाचे खाकर मोती की आँखों से टपाटप आँसू निकले। उन आँसुओं के ज़मीन पर गिरते ही वे बढ़िया मोती बन गये। अब्दुल्ला ने उन्हें ले जाकर सुलतान को सौंप दिया। सुलतान ते मोतियों को अपनी पुत्री को दे पूछा—"मोती भी मिल गये। क्या अब तुम शादी करने को तैयार हो?"

सुलतान की दी हुई मियाद के पूरा होने के पहले ही माणिक ने रोज़ कस्तूरी को नहलवाया। उस जल को नांदों में भरवा देती। तब कस्तूरी जल पर तैरती दिखायी देती। इस तरह कई दिनों में जो कस्तूरी इकट्ठी की गयी, वह अण्डे के बराबर हो गयी। तब अब्दुल्ला ने उसे ले जाकर सुलतान के हाथ सौंप दिया।

सुलतान ने उसे अपनी बटी के हाथ देकर पूछा–"तुम्हारी आखिरी इच्छा भी पूरी हो गयी। अब तुम वज़ीर के बेटे के साथ शादी करो।"

"मेरी इच्छाओं को वज़ीर के बेटे ने पूरा नहीं किया। मैं पहले से यही बताती आ रही हूँ कि जो मेरी इच्छाओं को पूरा करेगा, मैं उसी के साथ शादी करूँगी। इसलिए मेरी शादी अब्दुल्ला के साथ कर दीजिये।" सुलतान की बेटी ने कहा।

"तीन पत्नियोंवाले साधारण व्यापारी के साथ तुम शादी करोगी?" सुलतान ने पूछा।

"उसकी पत्नियाँ समुद्री कन्याएँ हैं। मैं उनकी दासी बनने के लिए भी क़ाबिल नहीं हूँ। मैं उनकी ही कृपा से अब्दुल्ला से शादी कर सकती हूँ। क्या वह मामूली व्यापारी है? कौन मामूली व्यापारी मेरी इच्छाओं को पूरा कर सकता है? आप जिसे बड़ा समझते हैं, वज़ीर का वह बेटा क्या ये चीज़ें ला सका?" सुलतान की बेटी ने पूछा।

सुलतान अपनी बेटी के सवालें का जवाब न दे पाया। उसने अब्दुल्ला को बुलावा कर पूछा–"मेरी बेटी के साथ शादी करो।"

"मेरी तीनों पत्नियों के अनुमति देने पर ही मैं आप की बेटी के साथ शादी कर सकता हूँ।" अब्दुल्ला ने कहा।

सुलतान समुद्री कन्याओं के पास अमूल्य भेंटे लेकर पहुँचा। उसकी बड़ी मिन्नतें करने के बाद उन तीनों बहनों ने अब्दुल्ला को सुलतान की बेटी के साथ शादी करने की अनुमति दी। तब सुलतान की बेटी की शादी अब्दुल्ला के साथ हुई।

अब्दुल्ला अपनी चारों पत्नियों को बराबर स्नेह देता रहा। सुलतान के मरने के बाद अब्दुल्ला सुलतान बना। उसके राज्य में लोग बड़े ही सुखी थे।

अन्नं दानात्परं दानं, विद्यादान मतः परं
अन्नेन क्षणिका तृटितः, यावज्जीवंच विद्याया ॥ १ ॥

समस्त दानों में अन्न का दान श्रेष्ठ है। उससे उत्तम विद्या का दान है। अन्न तात्कालिक रूप से तृप्ति देता है। मगर विद्या जीवन-भर तृप्ति देती है।

संपूर्ण कुंभो नकरोति शब्दं, अर्धोघटो शेष मुपैति नूनं;
विद्वान कुलीनो नकरोति गर्वं, गुणैर्विहीना बहु जल्पयंति ॥ २ ॥

भरा हुआ घड़ा छलकता नहीं। अध भरा घड़ा छलकता है। इसी भांति कुलीन विद्वान गर्व नहीं करता। मूर्ख ही ज्यादा अहंकारी होता है।

रूप यौवन संपन्नाः, विरुद्ध कुल संभवाः
विद्याहीनाः न शोभंते, निर्गंधा इव किंशुकाः ॥ ३ ॥

रूप, यौवन तथा उत्तम कुल में पैदा होने पर भी विद्या के अभाव में लोग गंधहीन पलाश की भांति शोभा नहीं देते।

परं पलित कायेन कर्तव्यः श्रुतसंग्रहः;
नतत्र धनिनो यान्ति यत्र यान्ति बहुश्रुताः ॥ ४ ॥

बुढ़ापे में भी ज्ञान का संपादन करना चाहिये। जहाँ उत्तम विद्वान जाते हैं, वहाँ पर नीच नहीं जा सकते।

सिंदबाद की अद्भुत यात्राएँ

मनुष्य का यह स्वभाव है कि कठिनाइयों में फँस जाने पर छटपटाते रहना और उनके हटने पर उनकी स्मृति में आनंद का अनुभव करना। कठिनाइयों के समय जो भय पैदा होता है, उन पर विचार करने से निरर्थक मालूम होता है।

सिंदबाद को भी ठीक ऐसा ही लगा। उसने तीन बार समुद्री यात्राएँ करके नाना प्रकार की तकलीफ़ें झेलीं। फिर भी उसे ऐसा मालूम होने लगा कि जिंदगी के माने आराम से बैठकर खाने-पीने व सुख भोगना नहीं है, बल्कि सारे संसार की यात्रा करते नये नये अनुभव प्राप्त करने में ही उसकी सार्थकता है। यह भी प्रतीत हुआ कि इसके साथ व्यापार करते हुये धनार्जन करना भी मानव का प्रमुख कर्तव्य है।

संक्षेप में यही बताना उचित होगा कि सिंदबाद के पैरों में यात्रा करने की खुजलाहट हुई। इसलिए वह अपने रिश्तेदार, मित्रों तथा सुख-भोगों को त्याग कर पहले से भी अधिक क़ीमती माल खरीद कर बस्त्रा नगर जा पहुँचा। वहाँ पर कुछ अन्य व्यापारियों के साथ एक जहाज़ पर सवार हो समुद्री यात्रा करने लगा। जहाज़ बड़ा तेज़ गामी था।

जहाज ने अपनी यात्रा में कई बंदरगाहों पर लंगर डाला। व्यापारियों ने सब जगह बड़े फ़ायदे पर अपना माल बेचा। एक दिन अचानक बीच समुद्र में मल्लाह ने लंगर डाला और कहा—"भाइयो, हम लोग भारी विपत्ति में फँस गये हैं।"

मल्लाह यह बात कही ही रहा था कि एक भारी आँधी उठी। ताड़ के पेड़ के बराबर समुद्र की लहरें उठीं और हज़ारों हाथियों की ताक़त के समान जहाज़ से टकराने लगीं। लहरों के थपेड़े खाकर

जहाज़ व्यापारियों और उनके माल के साथ डूब गया। सिंदबाद तथा कुछ व्यापारियों ने संयोग से एक लकड़ी के तख्ते पर सवार हो अपनी जान बचायी। लहरें गेंद की तरह तख्ते को उछालने लगीं। आख़िर तूफ़ान ने उनको एक किनारे ढकेल दिया। लहरों के भारी थपेड़ों से यात्री थक कर चूर हो गये थे। इसलिए वे लोग उस बालू में बिना खाये-पिये सो गये।

सवेरे उठने पर उनकी थकावट दूर हो गयी। इसलिए वे सब उठकर धीरे से चलते हुये आगे बढ़े। थोड़ी दूर चलने पर उन्हें एक महल दिखाई दिया। देखते-देखते उस महल से काले-कलूटे और चमड़े पहने हुये लोग उन व्यापारियों के पास दौड़ आये और उन्हें चुपचाप महल के अन्दर ले गये।

उस महल के अन्दर एक विशाल चौपाल था। उसमें एक ऊँची गद्दी पर एक राजा बैठा हुआ था। उसने सिंदबाद और उसके साथियों को बैठने का संकेत किया। सब के बैठने के बाद काले आदमियों ने व्यापारियों के सामने भोजन की थालियाँ सजायीं। सिंदबाद की समझ में न आया कि उस थाली में क्या क्या पदार्थ परोसे गये हैं। उनको देखते हुये उसे खाने की इच्छा न हुई। लेकिन बाक़ी लोगों ने आगा-पीछा सोचे-समझे बिना ताबड़तोड़ खा डाला। उनको खाना खाते देख सिंदबाद को लगा कि मानों जानवर चारा चर रहे हैं।

सिंदबाद के साथी भोजन कर ही रहे थे कि काले लोगों ने झारियों में कोई पदार्थ लाकर सब के शरीरों पर लेपन किया। शायद उस लेपन की महिमा ही थी, कि एक एक का पेट बेलून की तरह फूलने लगा। लगता था कि उनके पेटों के

बढ़ने के साथ उनकी भूख भी बढ़ती जा रही है। सिंदबाद यह देख चकित रह गया कि बराबर घंटों खाते रहने पर भी उनकी भूख मिटती नहीं है।

यह अच्छा हुआ कि सिंदबाद ने उस भोजन को छुआ तक नहीं। काले आदमियों ने उसके शरीर पर भी लेपन करना चाहा, मगर सिंदबाद ने इनकार किया। उसे जल्द ही मालूम हुआ कि ये काले लोग मानवभक्षक हैं और उनके साथियों को खूब खिला-पिला कर मोटे-तगड़े बनने पर उन्हें काट कर खाते हैं। काले आदमी मानवों को कच्चा ही खा डालते हैं, लेकिन उनका राजा रोज़ एक आदमी को भुनवा कर खाता है।

सिंदबाद ने अपने साथियों के बच जाने की आशा छोड़ दी। ऐसा मालूम होता था कि उनके पेटों के बढ़ने के साथ उनकी बुद्धि घटती जा रही है।

आखिर सिंदबाद ने देखा कि काले लोग उसके साथियों को चराने के लिए चरागाहों में हांक कर ले जा रहे हैं।

सिंदबाद को अपनी हालत पर बड़ी चिंता हुई। वह पहले से ही दुबला-पतला था, भय और भूख से सूख कर कांटा हो गया था। काले लोग उसकी बिलकुल

उसे खाना खिलाया। वहाँ पर आराम करने के बाद वे लोग एक नाव पर उसे अपने राजा के पास दूसरे टापू में ले गये।

वह नगर सुंदर था। लोगों की बड़ी भीड़ थी। रास्ते चौड़े और सुंदर थे। लोग बिना लगाम वाले घोड़ों पर आते-जाते थे। इस दृश्य को देख सिंदबाद ने राजा से पूछा—"आपकी प्रजा बिना लगाम के घोड़ों पर क्यों सवारी करती है?"

"अरे लगाम क्या चीज होती है? हम लोग जानते तक नहीं?" राजा ने आश्चर्य के साथ पूछा।
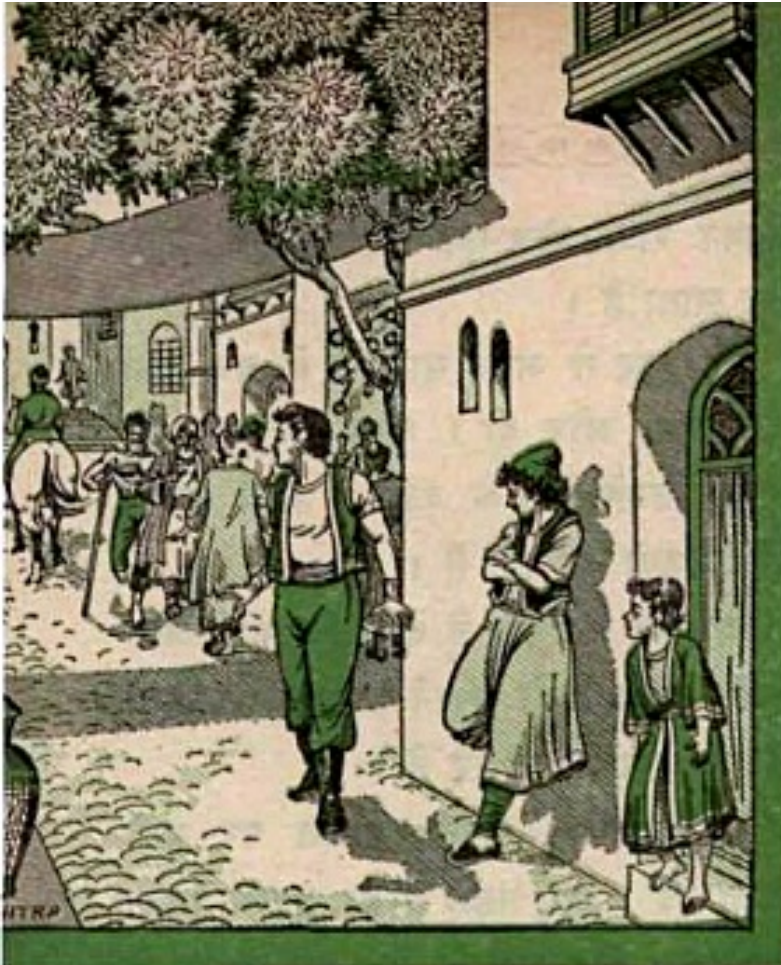
परवाह नहीं करते थे। इसलिए एक दिन वह महल से चल पड़ा। जब वह भागता जा रहा था, तब काले लोग उसके साथियों को हांकते चले आ रहे थे। सिंदबाद एक पेड़ की आड़ में छिप गया।

रास्ते में कंद-मूल खाते छे दिन चल कर सिंदबाद आखिर मनुष्यों के बीच पहुँच गया। उसी प्रदेश में टापू का दूसरा किनारा था। वहाँ के लोग वही भाषा बोलते थे, जो सिंदबाद बोलता था। उनकी बोली सुनने पर सिंदबाद की जान में जान आ गयी। उसने उन लोगों से अपनी सारी तक़लीफ़ें कह सुनायीं। उन लोगों ने

"आपकी आज्ञा हो तो मैं दो दिनों में लगाम तैयार कर आपको दिखाऊँगा। आपको खुद मालूम हो जायगा कि लगाम की वजह से कैसे आराम मिलता है?" सिंदबाद ने जवाब दिया।

राजा की आज्ञा पाकर सिंदबाद ने एक बढ़ई के द्वारा लकड़ी की लगाम तैयार करवा दी। घोड़े की पीठ पर लगाने के लिए परों की एक गद्दी तैयार की। उसे एक चमड़े की खोल, जरी के किनारे और रंग-बिरंगी गुच्छे बिठाये। इसके बाद एक लुहार से पैर रखने के रिकाब बनाये। उसने ये सारी चीज़ें पास में बैठकर तैयार करवा दीं।

इसके बाद सिंदबाद घुड़साल में गया। एक अच्छे घोड़े को चुन कर जीन लगाया। उसके कंठ पर नीले रंग के गुच्छे पहनाये। तब उस घोड़े को राजा के सामने खड़ा कर दिया। राजा ने घोड़े पर सवारी करके खुद समझ लिया कि जीन और लगाम से कैसा आराम मिलता है। उसने सिंदबाद पर खुश होकर उसे बहुत-सा धन और पुरस्कार भी दिये।

राजा की देखा-देखी मंत्री ने भी अपने घोड़े के लिए सिंदबाद से जीन और लगाम बनवायी। उस दिन से लेकर नगर के बड़े-बड़े धनी व जमीन्दारों ने सिंदबाद से जीन व लगाम तैयार करवायी और उसे दिल खोल कर इनाम दिये। सिंदबाद देखते-देखते बड़ा धनवान बन गया।

राजा से सिंदबाद की मैत्री हुई। राजा ने सोचा कि सिंदबाद की शादी कर दी जाय तो वह वहीं पर रह जायगा। राजा का उद्देश्य सुनकर सिंदबाद घबरा गया। लेकिन वह राजा के निर्णय का विरोध न कर सका। उसका विवाह हुआ। वधू सुंदर और धनी परिवार की थी। उन दोनों के रहने के लिए राजा ने एक सुंदर महल और सेवा के लिए नौकर-चाकर भी दिये।

पड़ोसी का यह जवाब सिंदबाद की समझ में न आया। लेकिन जल्द ही उसे असली बात मालूम हो गयी। वह यह कि उस देश के रिवाज़ के अनुसार पति और पत्नी में कोई भी मरे, दोनों को एक साथ ही दफ़ना देते हैं। सिंदबाद को उस रिवाज़ पर घृणा हुई। उसके देखते-देखते पड़ोसी अपनी पत्नी की लाश के साथ श्मशान में चला गया। नदी के किनारे एक पहाड़ पर एक गहरा कुआँ है। लोगों ने लाश के साथ उस मरी हुई औरत के पति को भी उस कुएँ में उतारा और कुएँ पर भारी चट्टान ढँक दी।
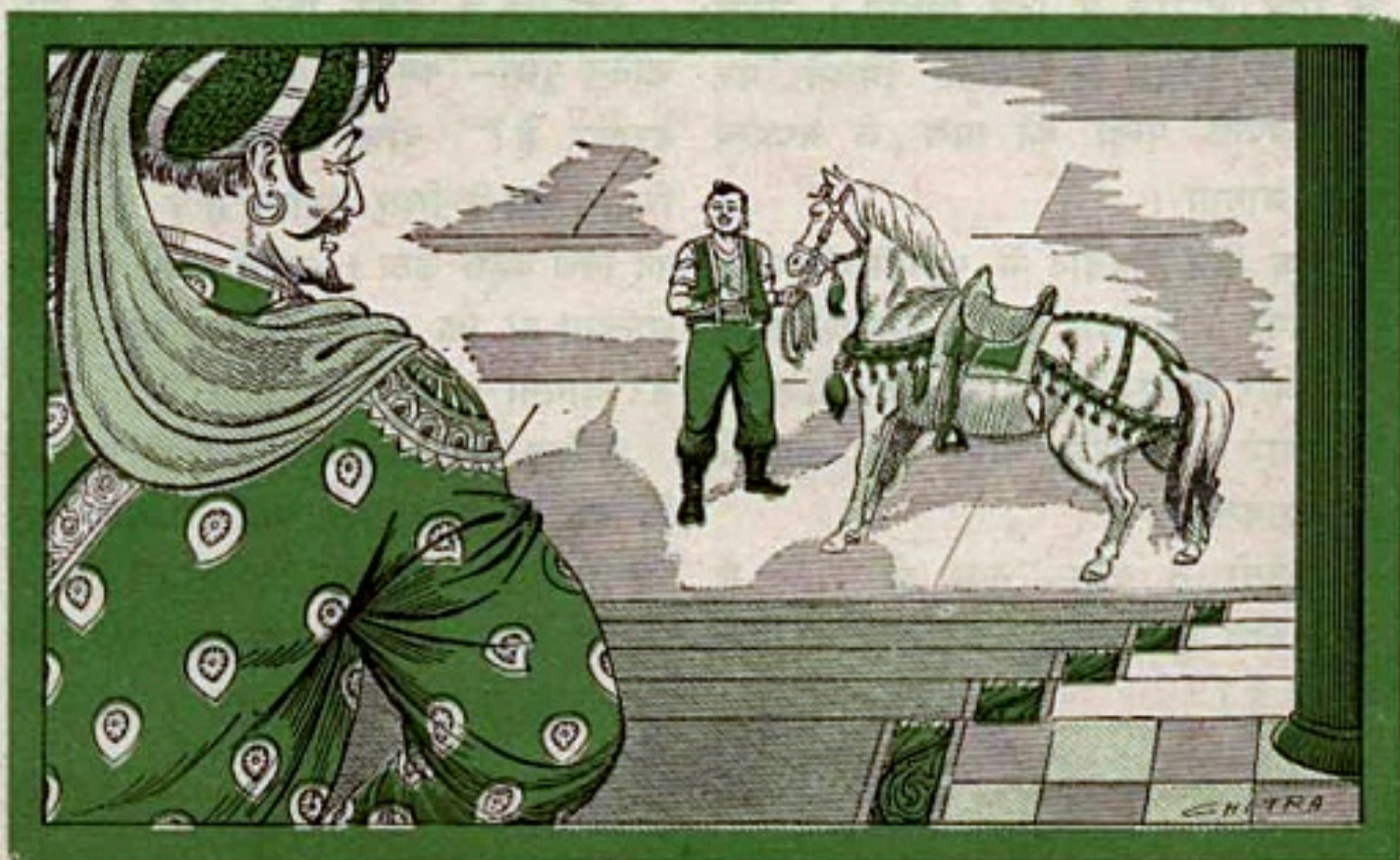
सिंदबाद ने कई महीनों तक अपनी पत्नी के साथ आराम से दिन बिताये। उसने यह भी सोचा कि मौक़ा मिलने पर वह अपनी पत्नी को साथ ले बग़दाद चला जायगा।

एक दिन सिंदबाद के पड़ोसी की पत्नी मर गयी। सिंदबाद उसका परामर्श करने गया और बोला–"आप चिंता न कीजिये। इस बार सुंदर और योग्य पत्नी आपको मिल सकती है।"

पड़ोसी ने कहा–"कुछ ही घंटों में मरने वाले मुझे दूसरी पत्नी कहाँ से मिल सकती है?"

सिंदबाद ने दूसरे दिन राजा के पास जाकर पूछा–"क्या यह रिवाज़ सबके लिए बराबर है?" राजा ने बताया कि यह रिवाज़ सब के लिए बराबर है। सिंदबाद का दिल दहल उठा। उसने अपने मन को सांत्वना दी कि अपनी पत्नी से पहले वही मर जायगा।

लेकिन ऐसा न हुआ। कुछ ही दिनों में सिंदबाद की पत्नी मर गयी। मानों इस घटना से सिंदबाद पर बिजली-सी गिरी। उसे यह आशा भी जाती रही कि राजा उसके मामले में यह रिवाज़ अमल न करेगा।

राजा ने खुद आकर सिंदबाद की होनेवाली मौत के प्रति सहानुभूति दिखायी। उसने यह भी बताया कि श्मशान तक राजा भी उसके साथ चलेगा।

सिंदबाद की पत्नी की लाश को गहनों से अलंकृत कर एक पेटी में रखा गया और उसे पहाड़ तक पहुँचा दिया गया। शव के साथ सिंदबाद और राजा भी पैदल चले। सिंदबाद ने राजा को समझाया कि अपने देश में उसके पत्नी और बच्चे भी हैं और वे उसका इंतज़ार करते होंगे। मगर उसकी बात सुननेवाला कोई न था।

पहले शव-पेटिका को कुएँ में उतारा गया। इसके बाद सिंदबाद की बगलों में रस्सियाँ बाँध दी गयीं। उन रस्सियों में पानी से भरी एक सुराही और सात रोटियाँ भी बाँध दी गयीं। सिंदबाद को कुएँ में उतारा गया। सिंदबाद ने कुएँ में पहुँच कर रस्सियाँ खोल दीं। तब ऊपर रहनेवालों ने रस्सियाँ खींच लीं और कुएँ को एक बड़ी चट्टान से ढँक दिया। इसके बाद सब चले गये।

कुएँ के नीचे एक विशाल गुफा थी। उसमें कहीं से रोशनी आ रही थी। सिंदबाद थोड़ी देर तक एक कोने में बैठे इस पर दुखी होने लगा कि वह क्यों घर से निकल पड़ा और समुद्र में क्यों न डूब गया!

वह भूख-प्यास से परेशान था। लेकिन इस आशा से वह रोटी और पानी का कम मात्रा में उपयोग करने लगा कि जहाँ तक हो सके, ज्यादा दिन तक जीवित रह सके। रात के वक्त सोने के लिए भी उसने जगह बना ली। कुछ ही दिनों में रोटी और पानी भी समाप्त हो गये। अब उसे मौत का इंतज़ार करने के सिवाय दूसरा मार्ग दीखता न था।

उस हालत में एक विचित्र घटना हुई। वह सो रहा था, अचानक कोई आवाज़ हुई तो उसकी आँख खुली। उसे ऐसी आवाज़ सुनाई दी कि मानों कोई जानवर भाग रहा हो। वह हिम्मत करके भागने वाले जानवर का पीछा करने लगा। थोड़ी दूर जाने पर उसे तारे टिमटिमाते नज़र आये। वह एक बिल था जिससे होकर शवों को खाने के लिए भेड़िये और श्रृगाल आते-जाते थे।

सिंदबाद जब उस बिल से होकर बाहर निकला तब उसे नक्षत्र दिखाई दिये। उसने घुटने टेक कर ईश्वर को धन्यवाद दिये। इसके बाद फ़िर गुफा में जाकर शवों के गहने उतारे और उन्हें लेकर बाहर आया। पहाड़ के दूसरे छोर पर समुद्र लहरा रहा था। वह समुद्र के किनारे पहुँच कर जहाज़ के इंतज़ार में बैठा रहा।

कुछ दिन बाद दैवयोग से उधर एक जहाज़ आ निकला। जहाज़ के यात्रियों ने उसे देखा और उसके निकट आये। वह गहनों की गठरी के साथ जहाज़ पर सवार हुआ। तब उसने नाविक से अपनी कहानी बतायी कि वह उसी जहाज़ का यात्री है जो तूफ़ान के थपेड़ों से टूट कर डूब गया था। उसने नाविक को खुश करने के लिए कुछ अच्छे आभूषण निकाल कर उसे देना चाहा, मगर नाविक ने बताया–"जो खतरों से बच गये हैं, उनसे मैं महसूल नहीं लेता।" नाविक की उदारता पर सिंदबाद बहुत खुश हुआ।

कुछ दिनों बाद जहाज़ बस्रा नगर पहुँचा। सिंदबाद ने कुछ दिन वहाँ पर बिताये। तब नदी पर यात्रा करके बगदाद पहुँचा। सिंदबाद को जीवित तथा गहनों के साथ लौटे देख उसके बन्धु व रिस्तेदार बहुत प्रसन्न हुये।

कुंतीदेवी इस बात का पता लगाने ब्राह्मण के घर में गयीं कि उन्हें आश्रय देनेवाले ब्राह्मण का परिवार क्यों रोता है? कुंतीदेवी को देख ब्राह्मण दुखभरे स्वर में बोला : "इस दुनिया में पत्नी और बच्चों के साथ सुखपूर्वक जीना नामुमकिन मालूम होता है। मैंने कभी अपनी पत्नी से कहा था कि इस गाँव को छोड़कर चले जाने में ही हमारा भला है। उसने यही जवाब दिया था कि वह यहीं पर पैदा हुई, यहीं बड़ी हो गयी, इसलिए अपने माता-पिता को छोड़ इस गाँव से बाहर नहीं जा सकती। उसके माँ-बाप तो कभी के मर गये हैं! इस गाँव में आज अपना कहने वाला एक भी रिश्तेदार नहीं है, फिर भी हम इस गाँव को छोड़ नहीं पाये। उस वक़्त अगर वह मेरी बात सुनती तो आज यह विपत्ति न आती! आज हम क्या कर सकते हैं? मैं उस राक्षस का भोजन किसे बना सकता हूँ? आज तक मेरी आज्ञाकारिनी बनकर मेरी संतान की माँ बनी हुई पत्नी को मैं उस राक्षस का आहार कैसे बना सकता हूँ? या अपने वंश की लता को फैलानेवाले पुत्र को कैसे उस राक्षस के पास भेजूँ? इसलिए उस राक्षस का आहार बनने के लिए मैं ही जाता हूँ। इससे बढ़ कर कोई दूसरा चारा नहीं है।"

ब्राह्मण की पत्नी इसके लिए तैयार न हुई। वह कहने लगी कि अगर उसका

१२. बकासुर का बध

पति मर जाता है तो उसे और उसकी संतान की रक्षा न होगी। दूसरों की दृष्टि में वे लोग गिर जायेंगे। बच्चों का भविष्य बनाने की सामर्थ्य भी उसमें नहीं है। इसलिए वही राक्षस का आहार बनने के लिए जायगी। उसने यह आशा भी प्रकट की कि अगर वह राक्षस का आहार बनकर जाती है तो राक्षस नारी की हत्या करने में संकोच करके शायद उसे छोड़ भी दे।

यह बात सुनकर ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से गले लगाया और वे दोनों ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे।

उन्हें रोते देख उनकी पुत्री बोली-"आप दोनों नाहक़ क्यों रोते हैं? मुझे राक्षस के आहार के लिए भेज दीजिये। मैं आज नहीं तो कल आप लोगों से अलग होनेवाली हूँ। इसलिए मुझे भेज देने से आपका कोई नुक़सान न होगा। उलटे आप खतरे से बच जायेंगे।"

उस वक़्त पाँच साल का लड़का छोटी-सी डंडी हाथ में लिये, इधर-उधर उत्साह पूर्वक टहलते हुए तुतली बोली में कह उठा-"रोओ मत, मैं उस राक्षस को मार डालूँगा।" उसकी बातों पर सब हँस पड़े।

अब कुंती देवी से रहा न गया। वे उनके निकट पहुँच कर ब्राह्मण से बोलीं-"महाशय, मुझे साफ़-साफ़ बता दीजिये कि आप कैसी विपत्ति में पड़े हैं? मुझसे जो कुछ हुआ, मैं मदद करूँगी।"

इस पर ब्राह्मण ने कुंती देवी से कहा-"देवीजी, आप हम पर रहम खाकर ऐसी बातें कहती हैं। हमारी इस विपत्ति को कोई भी मनुष्य दूर नहीं कर सकता है। इस गाँव के निकट बक नामक एक नर भक्षक राक्षस है। वह रोज लोगों का माँस खा-खाकर तगड़ा बना हुआ है। वह इस गाँव का रक्षक बना हुआ है। इसलिए बदले में रोज गाँववालों को उसके खाने

के लिए एक गाड़ी भर खाना, दो भैंस और एक आदमी को भेजना है । अगर किसी दिन कोई इस नियम का उल्लंघन करता है तो उस दिन वह राक्षस गाँव पर टूट पड़ता है और जो भी सामने आया, उसे मार डालता है। इस देश का राजा वेत्रकीयगृह नामक प्रदेश में रहता है। वह राक्षस की बारी से गाँववालों को बचाने का कोई भी प्रयत्न नहीं करता है। वह नालायक़ है। उसके राज्य में रहनेवाली प्रजा को ये विपत्तियाँ भोगनी ही पड़ रही हैं। आज हमारी बारी आ गयी है। हमको अगर राजा का आश्रय मिलता और हमारे पास काफ़ी धन होता तो हम किसी मनुष्य को खरीदकर राक्षस के पास भेज देते। इसलिए हमारे परिवार के लिए यह विपत्ति भोगनी ही पड़ रही है। हम एक को छोड़कर अन्य लोग जी नहीं सकते। इसलिए हम चारों एक साथ जाकर उस राक्षस का खाना बन जायेंगे।"

कुंतीदेवी ने ब्राह्मण की कहानी सुनकर कहा–"महाशय, आप बेफ़िक्र रहिये। आज उस राक्षस के खाने के लिए मैं अपने पुत्र को भेज दूंगी। उसे राक्षस मार नहीं सकता है। वही राक्षस को मार डालेगा। वह बड़ा बलवान है। अलवा इसके वह मंत्र-तंत्र जानता है। इसी लिए मैं उसे भेज दूंगी। असल में अपने पुत्र को राक्षस का खाना बनाने के लिए नहीं। चाहे कोई भी माता हो, अपने सौ पुत्रों के होने पर भी किसी भी पुत्र को वह मौत के हाथों में सौंप सकती है? इसलिए आप मेरी बात मान लीजिये, मगर यह बात इस गाँव के किसी के कानों तक न पड़े। अगर मेरे पुत्र के गुरु को यह बात मालूम हो जाय और वे अस्वीकार कर बैठे तो मेरे पुत्र के द्वारा राक्षस को मार डालने का मौक़ा भी जाता रहेगा।"

अपनी माता की बातें सुनकर युधिष्ठिर दुखी हुआ। उन्होंने सोचा कि उनकी माँ ने जल्दबाजी की है। वे जानते हैं कि पांडवों का भविष्य भीमसेन के भुजबल पर निर्भर है। अगर वे लोग कौरवों को हराकर अपना राज्य लेना चाहे तो भीम के बिना कैसे संभव है? दुर्योधन नें धोखे से लाख के गृह में जब पांडवों को मार डालने का षड़यंत्र किया, तब सब को उस विपत्ति से भीमसेन ने ही बचाया था।

युधिष्ठिर की बातें सुनकर कुंतीदेवी ने उनका विरोध किया। विपत्ति में पड़े हुए लोगों की रक्षा करना क्षत्रियों का धर्म है। उस ब्राह्मण परिवार का उपकार न करना बड़ा पाप होगा। भीमसेन के बारे में डरने की कोई जरूरत ही नहीं है। वह बड़े राक्षस को मार सकता है। कुंतीदेवी का विचार था कि उन्हों ने जो निर्णय किया, वह सब तरह से उचित ही है। यही बात उन्होंने युधिष्ठिर से भी कही। फिर भी युधिष्ठिर अंतिम समय तक कुंतीदेवी के विचारों का विरोध करते रहे।

कुंतीदेवी की बातों पर ब्राह्मण का विश्वास जम गया। उसके मन में विपत्ति से बचने पर खुशी और कुंतीदेवी के उपकार के प्रति कृतज्ञता के भाव पैदा हुए। तब कुंतीदेवी ने भीमसेन से सारी बातें बतायीं। भीम ने अपनी माता की आज्ञा का पालन करने का वचन दिया।

इस बीच चारों पांडव भिक्षा लेकर घर लौट आये। भीम को बहुत ही प्रसन्न देख युधिष्ठिर ने इसका कारण पूछा। कुंतीदेवी ने सारा समाचार सुनाकर कहा—"इतने दिन बाद हमें इस ब्राह्मण परिवार का प्रत्युपकार करने का मौक़ा मिला है।"

सवेरा होते ही भीमसेन ने ब्राह्मण से मिलकर कहा—"महाशय, रात-भर मुझे नींद नहीं है, भूख से परेशान हूँ। आप

मुझे पेट-भर बढ़िया खाना खिलायेंगे तो मैं राक्षस के साथ बड़े उत्साह से लड़ सकता हूँ।" इस पर ब्राह्मण ने भीम को भक्ष्य, भोज्य, पेय, घी-दही आदि खूब खिलाया।

इसके बाद भीम ने गाड़ी में दो भैंसें जोत दीं। गाड़ी को अन्न से भर दिया। तब गाड़ी को हाँकते गाँव की दक्षिणी दिशा में चल पड़ा, जहाँ पर बक रहा करता था। गाड़ी को यमुना नदी के किनारे रोक दिया। बक को ज़ोर-शोर से पुकारा। उसके आने तक भीम चुप बैठा न रहा, बल्कि खाना खाने लगा।

एक मामूली आदमी को अपने को पुकारते देख बक राक्षस नाराज़ हो उठा। उसके वास्ते एकचक्रपुर वासियों ने जो खाना भेजा था, उसे भीम को खाते देख बक उसके निकट दौड़ आया और ललकारते हुए बोला–"अरे, तुम कौन हो? मिनटों में मरनेवाले तुम बेफ़िक्र हो मेरा खाना कैसे खाते हो?"

भीम बक की ओर देख मुस्कुरा पड़ा और फिर खाने में लग गया। बक ने चिल्लाकर हाथ उठाये भीम पर हमला कर दिया। फिर भी भीम निश्चिंत हो खाना खा रहा था। अपनी ललकार सुनकर
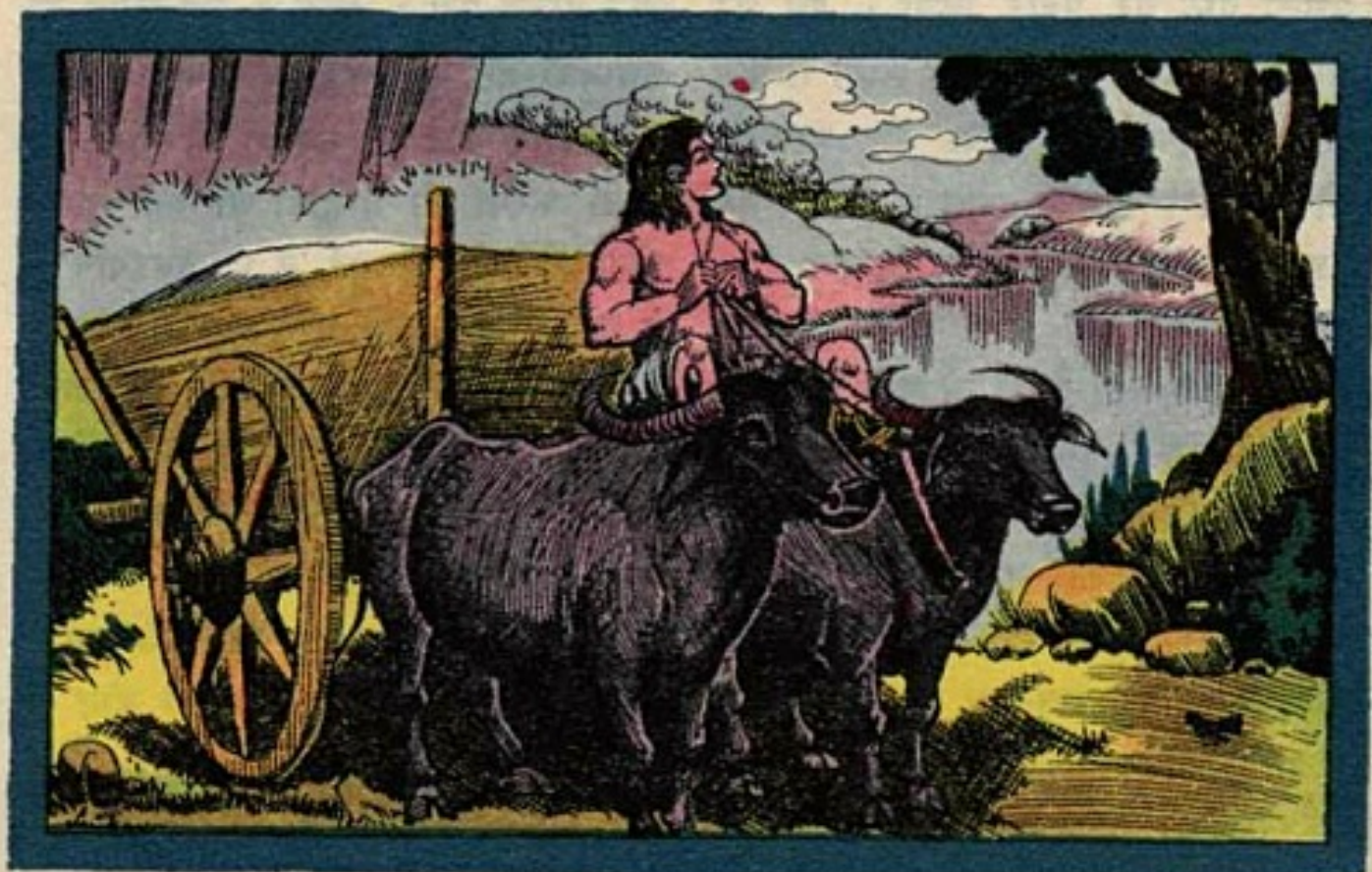
के समाप्त होने तक वे दोनों पेड़ों से ही लड़ते रहें।

इसके बाद बक ने भीम को अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया। दोनों ने मल्ल-युद्ध करते एक दूसरे को दूर फेंक दिया, ज़मीन पर घसीटा। आखिर भीम ने बकासुर को नीचे गिराया, उसकी छाती पर बैठकर घुटनों और मुक्कों से मारने लगा। उसकी गर्दन और कमर पर बुरी तरह वार किया। बकासुर भीम की चोट खाकर ख़ून उगलते मर गया।

बकासुर की चीख सुनकर उसके रिश्तेदार दौड़े हुए आये और डर के मारे काँपते चारों ओर ताकने लगे। भीम ने उन लोगों को चेतावनी देते हुए कहा—"भविष्य में तुम लोगों में से कोई भी मनुष्यों को मारने की चेष्टा करेगा तो तुम्हारी भी वही हालत होगी जो बक की हुई है। खबरदार!" वे सभी राक्षस डरते डरते भाग खड़े हुए।

भीम ने बकासुर के शव को खींच लाकर गाँव के द्वार पर रखा, तब नदी में जाकर नहाया। फिर घर लौटकर सारा हाल युधिष्ठिर को सुनाया।

गाँववालों ने बकासुर की लाश देखी। जल्दी ही सारे गाँव में बक की मौत का

भी भीम को विचलित न होते देख बक ने उसकी पीठ पर प्रहार किया। इस पर भी परवाह किये बिना भीम खाना समाप्त करके नदी के पास पहुँचा और हाथ-मुंह धोने लगा। बक ने क्रोध में आकर एक पेड़ उखाड़कर भीम पर फेंक दिया।

भीम भर पेट पानी पीकर बक के साथ युद्ध के लिए तैयार हो गया। बक ने जो पेड़ फेंका, उसे भीम ने बड़ी आसानी से अपने हाथ में लिया। बक ने एक दूसरा पेड़ फेंका तब भीम ने उसे अपने हाथ के पेड से बीच में ही रोक दिया। आस-पास के सभी पेड़ों

समाचार आग की तरह फैल गया। कोई यह नहीं जानता था कि बक को किसने मार डाला है। लेकिन सब ने बक को मारनेवाले की प्रशंसा की और अपने इष्ट देवों को प्रणाम किया। जब लोगों को यह मालूम हुआ कि उस दिन की बारी एक ब्राह्मण की है, तब सब ने उसके पास पहुँचकर पूछा कि बक को किसने मार डाला है।

अपने घर में आश्रय लिये हुए लोगों का रहस्य प्रकट करना संभव न था, इसलिए ब्राह्मण ने गाँववालों से कहा–"भाइयो, कल मेरी बारी थी। मैं जब दुख में पड़ा हुआ था, तब एक सिद्ध योगी ने आकर सारी बातें जान लीं और उसने कहा कि वही राक्षस को खाना ले जायगा। राक्षस उसकी हानि नहीं कर सकेगा। आज राक्षस मरा पड़ा है। इसलिए यह काम उसी पुण्यात्मा का होगा।"

गाँववालों ने आनंद में आकर ब्राह्मणोत्सव किया। कुंती देवी और पांडवों ने भी खुशी से वह उत्सव देखा। वे लोग उसी ब्राह्मण के घर में अज्ञात रूप से दिन काट रहे थे। मधुकरी करके अपना पेट पालते थे।

एक दिन उस ब्राह्मण के घर देशाटन करते एक और ब्राह्मण अतिथि बनकर आया। ब्राह्मण आतिथ्य स्वीकार कर अपने देशाटन के सारे समाचार सुनाये। कई देशों के राजाओं का समाचार सुनाते यह भी बताया कि पांचाल देश पर राजा द्रुपद राज्य करता है। उसके शिखंडी, धृष्टद्युम्न और द्रौपदी नामक संतान है। इसी संदर्भ में उस ने द्रौपदी का जन्म और उसके स्वयंवर के प्रबंध का वृत्तांत भी संक्षेप में सुनाया। पांडव और कुंती देवी ने भी उस वृत्तांत को विस्तार पूर्वक सुनाने की इच्छा प्रकट की। इसलिए ब्राह्मण यों कहने लगा।
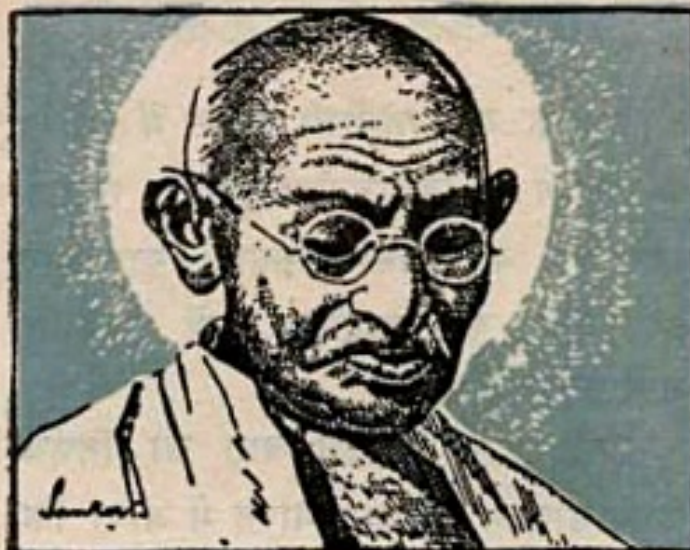
[१२]

गांधीजी उन्हीं दिनों में क़ानून-भंगवाले आन्दोलन पर विचार करने लगे। लेकिन वेल्स के युवराज के आगमन के सिलसिले में बंबई में दंगे हुये। परिणाम स्वरूप गांधीजी ने आन्दोलन बंद किया। इसी समय उत्तर प्रदेश के चौरीचौरा में जो सत्याग्रह हुआ, उसमें पुलिस ने सत्याग्रहियों पर अन्यायपूर्वक लाठियाँ चलाईं। इस से क्रोध में आकर लोगों ने पुलिस के सिपाहियों को ज़िंदा जला डाला। इस वजह से गांधीजी ने अपना आन्दोलन रोक दिया। उन्हें लगा कि जनता के द्वारा सामूहिक आन्दोलन चलाने के लिए देश में अनुकूल वातावरण नहीं है।

गांधीजी जिस वक़्त, आन्दोलन चलाना चाहते थे, उस समय कई नेताओं ने आपत्ति उठायी थी। जब उन्होंने आन्दोलन बंद किया, तब कइयों ने इसका विरोध भी किया। उन में कुछ लोगों का अहिंसा पर विश्वास न था। इसलिए गांधीजी पर यह आरोप लगाया कि उन्होंने चौरीचौरा कांड को बहाना बनाकर सत्याग्रह-आन्दोलन को बंद किया है।

१० मार्च १९२२ को गांधीजी को गिरफ़्तार किया गया। इसका कारण यह था कि उन्होंने तीन सरकारी विरोधी लेख लिखे थे। अदालत में गांधीजी ने हिंसा कांड की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। फलतः गांधीजी को ६ साल की सज़ा देकर पूना के समीप खिड़की के यईवाडा जेल में रखा गया।

दो साल पूरा होने के पहले ही गांधीजी को आंतड़ियों की बीमारी हुई, इसलिए उसकी शस्त्रचिकित्सा हुई। फिर क्या था,

इस के बाद गांधीजी के मन में देश के पुनर्निर्माण का विचार पैदा हुआ। उन्होंने सारे देश का भ्रमण किया। ग्रामोद्धार और खादी का आन्दोलन उन्हें उपयोगी जान पड़े।

उन्हीं दिनों में इस बात का निर्णय करने साइमन कमीशन भारत में आया कि भारतीय स्वराज्य के योग्य हैं या नहीं। उस कमीशन का सारे देश ने बहिष्कार किया। परिणाम स्वरूप जनता में राजनैतिक चेतना जागृत हुई। ३० दिसंबर १९२९ को कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पास किया। इस वजह से जनता और सरकार के बीच संघर्ष अनिवार्य हो गया। गांधीजी ने कानून-भंग का आन्दोलन नमक सत्याग्रह के साथ प्रारंभ किया। वे कुछ सत्याग्रहियों को साथ ले अहमदाबाद से समुद्र के किनारे स्थित दण्डी के लिए रवाना हुये। १९३० में कानून-भंग का जो आन्दोलन शुरू हुआ, वह देश-व्यापी आन्दोलन बना। इसी साल इंग्लैण्ड में पहली गोल मेज़ बैठक हुई। उस में कांग्रेस के प्रतिनिधियों ने भाग नहीं लिया। इसलिए समस्या ज्यों की त्यों रह गयी।

एक महीने के अन्दर ५ फ़रवरी १७२४ को उन्हें जेल से रिहा किया गया।

उन्हीं दिनों में देश में हिन्दू और मुसलमानों के बीच वैमनस्य बढ़ गया। ब्रिटीश शासकों ने दोनों जातियों के बीच भेदभाव पैदा किये। कई स्थानों पर मज़हबी दंगे हुये। सितंबर १७२४ को कोहट में २५५ हिन्दू मारे गये। इस पर गांधीजी ने २१ दिन तक अनशन किया। अनशन का फल बहुत दिन तक क़ायम न रहा। इसीलिए गांधीजी ने १९२७ में कहा था—"हिन्दू-मुसलमानों की मैत्री की समस्या अब मानवों के हाथों में न रही।"

१७ फ़रवरी १९३२ में वाइसराय इर्विन और गांधीजी के बीच चर्चाएँ शुरू हुईं। आखिर दोनों के बीच एक समझौता (दिल्ली समझौता) हुआ। इस कारण कांग्रेस ने अपना आन्दोलन बंद किया। सरकार ने राजनैतिक क़ैदियों को रिहा किया। यह कांग्रेस के सिद्धांतों के अनुकूल नहीं था। गांधीजी यह जानते हुये कि लंदन में होनेवाली दूसरी गोल मेज बैठक विफल होगी, उस में हाज़िर होने को उन्होंने मान लिया। इस बैठक में कांग्रेस के प्रतिनिधि गांधीजी अकेले ही थे।

१९३२ में गांधीजी जब बंबई लौट आये, तब उन्हें फिर गिरफ़्तार किया गया। दिल्ली का समझौता रद्दी की ठोकरी का हवाला हुआ। कांग्रेस पर प्रतिबंध लगाया गया। कांग्रेस को दबाने के लिए सरकार जो योजनाएँ तैयार कर रही थी, उनके मालूम होने के पहले ही गांधीजी ने कहा था–"हमने आज तक लाठियों का सामना किया। अब हमें बंदूक़ों का सामना करना पड़ेगा।" सरकार ने राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलने के लिए बहुत ही कठिन क़दम उठाये और सरकार ने सोचा भी कि उसके प्रयत्न सफल भी हुये हैं।
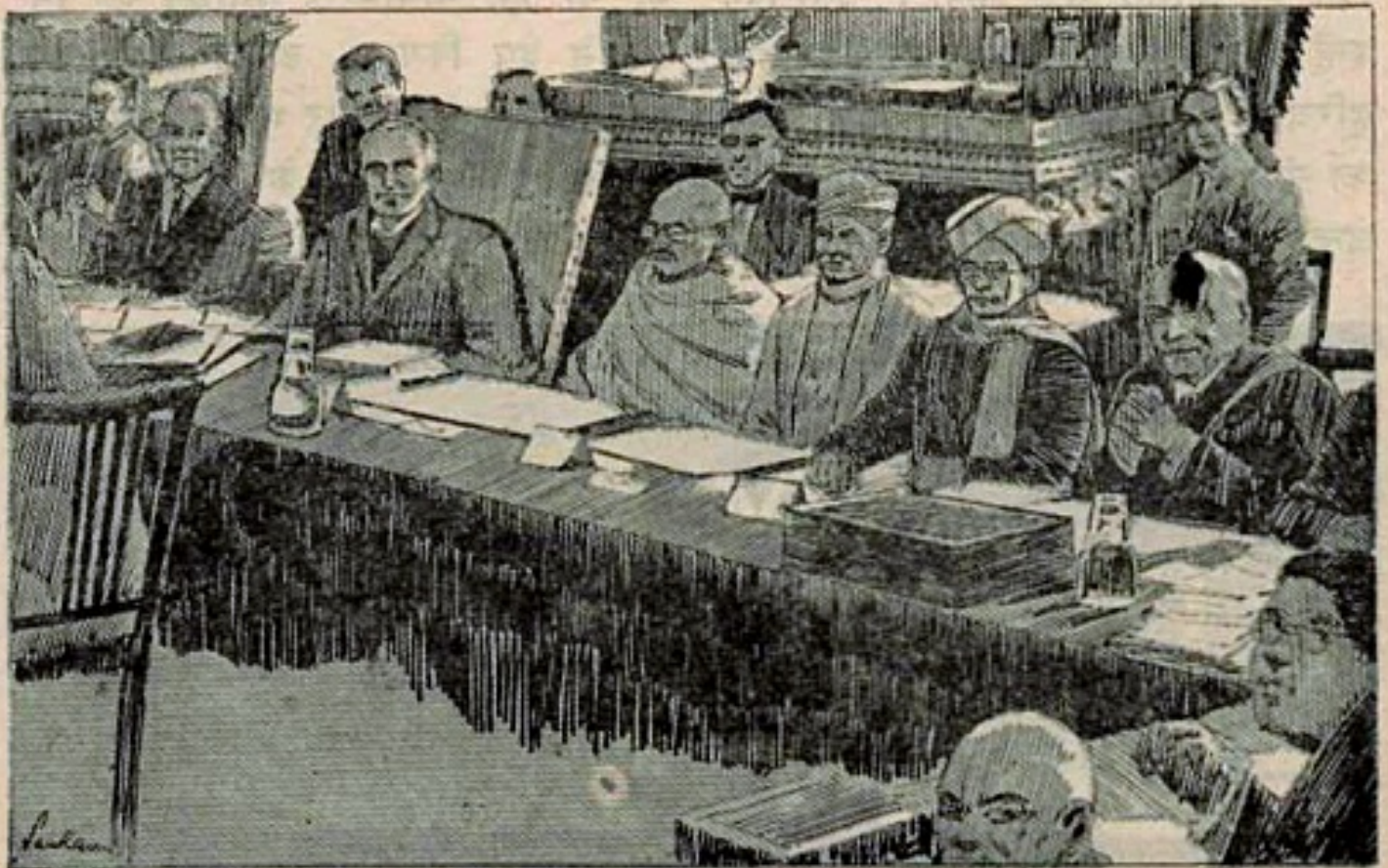
गांधीजी को जब यह मालूम हुआ कि सरकार अपने नये शासन-विधान में अलग चुनाव-फिरकों का प्रबंध कर रही है, तब उन्होंने आमरण अनशन की घोषणा की। यह बात गांधीजी को बड़ी भयंकर मालूम हुई कि अछूत हमेशा के लिए अछूतों की सूची में ही रह जायेंगे। २० सितंबर को उन्होंने आमरण अनशन शुरू किया। सारे देश में आन्दोलन छिड़ा। अछूतों के नेता अंबेदकर ने अलग चुनाव-फिरकों के प्रति अपनी दृढ़ता प्रकट की। आखिर पूना के समझौते के कारण गांधीजी के प्राण बच गये।

५ मई १९३३ में गांधीजी ने फिर २१ दिन का अनशन शुरू किया। उसी दिन इन्हें जेल से रिहा किया गया। उन्होंने हरिजनों के कल्याण के हेतु कार्य करने का संकल्प किया। साबरमती आश्रम को उन्होंने हरिजन सेवक संघ को सौंप दिया और अपना निवास वर्धा के लिए बदल दिया। दस महीनों के अन्दर ८ लाख रुपयों की हरिजन-निधि वसूल हुई।

छुआछूत हिन्दू समाज में अपनी गहरी जड़ें जमाये हुई थी। उसके विरुद्ध गांधीजी के काम करते देख हिन्दू नाराज़ हो उठे। २५ जून १९३३ को पूना में गांधीजी पर बम फेंका गया। फलतः सात आदमी घायल हुए। गांधीजी बाल बाल बच गये। मार्च १९३४ में बिहार में जब भयंकर भूकंप हुआ, तब गांधीजी ने कहा था कि यह छुआछूत नामक पाप का दण्ड है। सनातनवादियों ने कहा कि छुआछूत के विरुद्ध करनेवाले प्रचार का दण्ड है। चाहे जो भी हो, गांधीजी ने छुआछूत का पूर्ण रूप से द्वेष किया। उनका कार्य पूर्ण रूप से सफल न होने पर भी, इस समाजिक अन्याय का अंत करने के लिए आवश्यक नींव पड़ी।

९९. पालोमार दूरदर्शिनी

अमेरिका के पालोमार नामक पहाड़ पर संसार के सब से बड़ा प्रतिफलक (२०० इंचों वाली दूरदर्शिनी) है। उसकी इमारत (ऊँचाई १२५ फ़ुट) को आगे से देखा जा सकता है। यह आकाश में सौ करोड प्रकाश-वर्षों की दूरी तक "देख" सकती है। मनुष्य की आँख देख सकने वाली हीन कांति वाले नक्षत्र से ४० लाख गुने हीन कांति वाले नक्षत्रों को यह दूरदर्शिनी दिखाती है। दायीं ओर दूर दीखने वाली सफ़ेद इमारत में "बिगष्मिट" टेलिस्कोप है। इसकी मदद से आकाश के अनेक भागों के फ़ोटो लेकर प्रकाशित किये गये हैं।

Photo by Madan Gopal
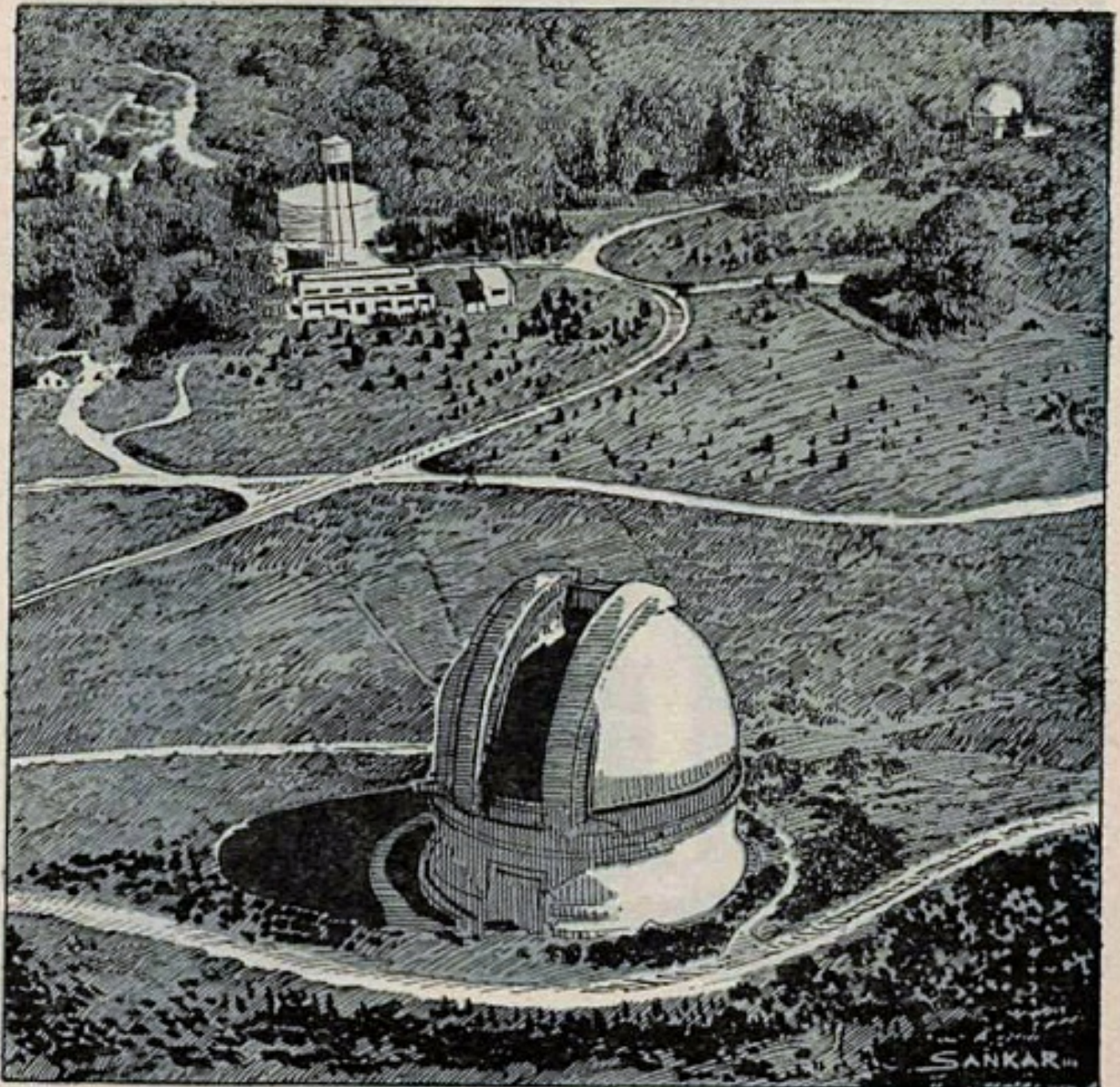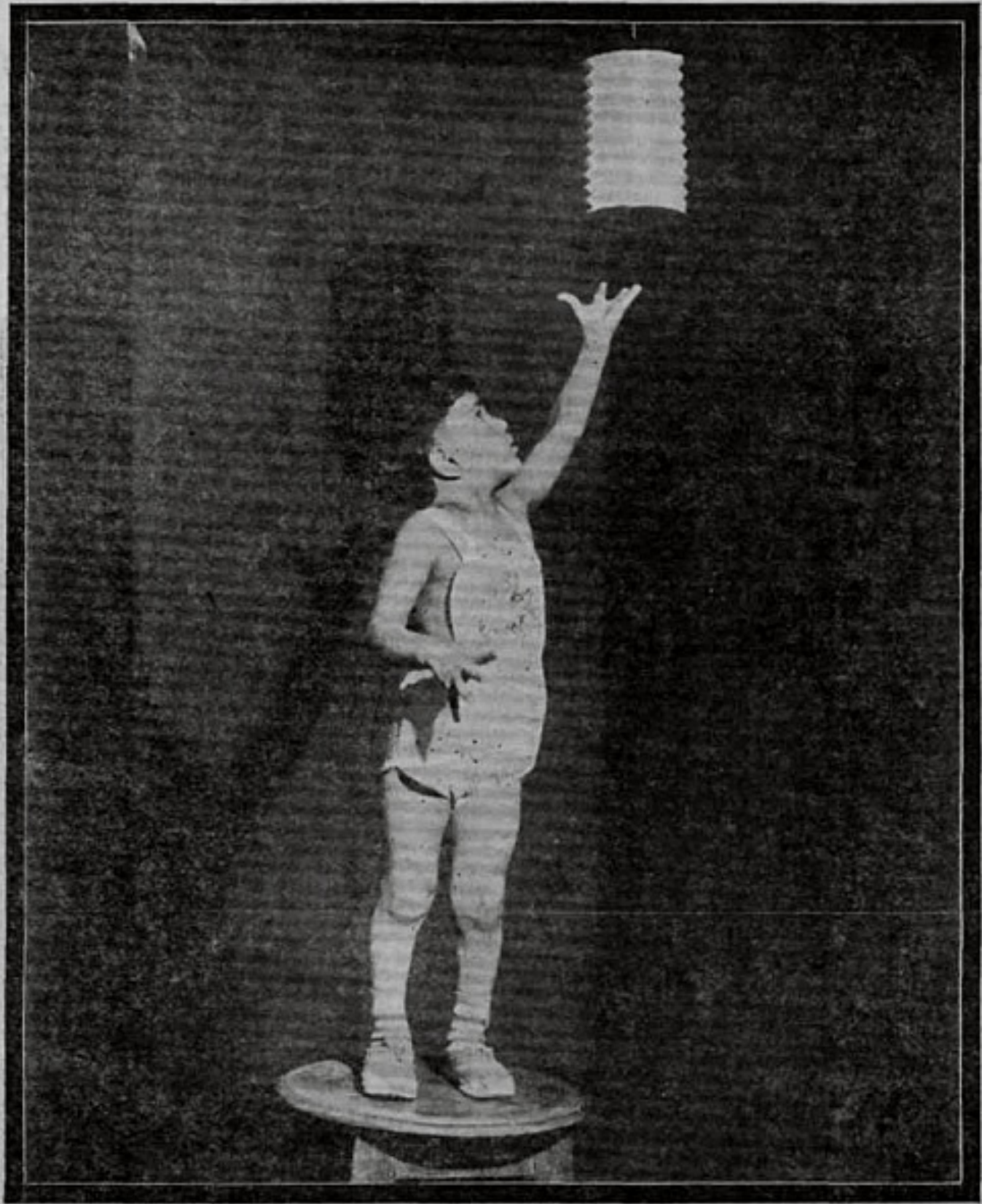
पुरस्कृत परिचयोक्ति

'मैं बालक बहियन को छोटो'

प्रेषक : रमेश कमरानी-भोपाल

Photo by Prasad

पुरस्कृत परिचयोक्ति

'चोरी करत उतरि गवा फोटो'

प्रेषक: रमेश कमरानी-भोपाल

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

मई १९७० :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख़ १० मार्च १९७० के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

मार्च – प्रतियोगिता – फल

मार्च के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गयी हैं।

इनके प्रेषक को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **मैं बालक बहियन को छोटो।**

दूसरा फ़ोटो: **चोरी करत उतरि गवा फ़ोटो।**

प्रेषक: **रमेश कमरानी,**
४३, तांत्या टोपे नगर, भोपाल - ३

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3 Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

बदन में दर्द ? मिन्टों में आराम पाइये...

अमृतांजन के ज़रिये !

बदन का दर्द, सर्दी जुकाम, सरदर्द और मोच के दर्द से छुटकारा पाने के लिये झट अमृतांजन मालिश कीजिये... तकलीफ से आराम। पिछले ७५ वर्षों से भी अधिक समय से यह एक निर्भरयोग्य घरेलू दवा है। अमृतांजन की एक शीशी हमेशा पास रखिये। इसके अलावा यह किफायती 'जार' और कम कीमत वाले डिब्बों में भी मिलता है।

AMRUTANJAN
Pain Balm
Amrutanjan Ltd.

AM 5433A

अमृतांजन—सर्दी-जुकाम और दर्द के लिये १० दवाओं का एक अपूर्व मिश्रण।

अमृतांजन लिमिटेड : मद्रास ० बम्बई ० कलकत्ता ० नई दिल्ली ० हैदराबाद ० बंगलोर